6

सिद्धता की ओर बढ़ना

(6:1--20)

सिद्धता की ओर बढ़ने के लिए चेतावनी और शिक्षा (5:11—6:20) (क्रमशः)

मसीह की शिक्षा या डॉक्ट्रिन का मुख्य लक्ष्य सिद्धता की ओर बढ़ने वाला होना आवश्यक है। पौलुस के लिए यह मुख्य बात थी और हमारे लिए भी होनी चाहिए (फिलिप्पियों 3:12-14)। यदि हम मसीह में सम्पूर्ण व्यक्ति बनने की कोशिश करें तो हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को पाने के और निकट आ जाएंगे। इब्रानियों 6 के आरम्भ में इस्राएलियों की पुस्तक के लेखक ने सिद्धता की ओर बढ़ने की इसी शिक्षा पर ज़ोर दिया।

विश्वासत्याग की चेतावनी (6:1-8)

6:1-3

[1]इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। [2]और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें। [3]यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे।

आयत 1. इस पैरे का आरम्भ इसे अभी-अभी कहीं बात के साथ जोड़ते हुए **इसलिए** के साथ होता है। लेखक समझाने वाला था कि सिद्धता की ओर कैसे बढ़ना है। बढ़ने की आवयश्कता और बढ़ने के स्वाभाविक होने को दिखाने के बाद उस ने पाठकों को बताया कि इसे कैसे करना है।

लेखक के **आओ** के इस्तेमाल का अर्थ यह नहीं है कि वह अपने आपको उन बालक मसीही लोगों में गिनता था जिनकी वह बात कर रहा था। ''हम'' का यह इस्तेमाल 2:3 वाले ''हमें'' जैसा ही है, जिसे आम तौर पर यह दावा करने के लिए दोहराया जाता है कि लेखक पौलुस नहीं हो सकता। लेखक 6:1 वाले ''हम'' में नहीं था इसलिए वह 2:3 वाले ''हमें'' में भी नहीं होगा। यह आयत इब्रानियों की पुस्तक के सम्भावित लेखक के रूप में पौलुस को निकालती नहीं है।

शिक्षा की आरम्भ की बातें *मसीह की शिक्षा है* या मसीह द्वारा दी गई आरम्भिक शिक्षाएं? KJV में ''मसीह की डॉक्ट्रिन के सिद्धांत'' है। यूनानी भाषा में इस वाक्यांश का अर्थ मूलतया

''मसीह के वचन का आरम्भ'' है। प्रभु द्वारा आरम्भ में बोला गया वचन उद्धार से सम्बन्धित था (2:3), जो इस बात का सुझाव देता है कि यह वाक्यांश *मसीह द्वारा दी गई आरम्भिक शिक्षाओं* के लिए है। इस वचन में दी गई बुनियादी शिक्षाओं की सूची में *मसीह की शिक्षा* से कहीं बढ़कर है। यह तर्क दिया जाता है कि यहां बताई गई चार चीज़ें यहूदी, या पुराना नियम, शिक्षाएं हैं। परन्तु इस विचार का इस तथ्य से खण्डन हो जाता है कि आरम्भिक समयों से लेकर कलीसिया इन्हें ''विशेष रूप से मसीही शिक्षाएं'' समझती थी।[1]

इस विचार को व्यक्त करने का एक ढंग यह कहना है कि बुनियादी तौर पर मसीही शिक्षाएं ही हैं न कि पुरानी यहूदी शिक्षाएं, ''वे पूर्व यहूदियों के रूप में पाठकों द्वारा सीखी गई बातें हैं जब उन्हें मसीह में लाया गया था।''[2] व्यवस्था की हर बात को मसीही संदर्भ में नया महत्व मिलता है।[3]

इब्रानियों के अनुसार सिद्धता की ओर बढ़ने का पहला कदम निरन्तर है: **बढ़ते** जाने की वचनबद्धता। **सिद्धता** (*teleiotēs*) का अनुवाद ''पूर्ण विकसित'' या ''सम्पूर्ण'' भी हो होता है। यह उस का पता देता है जो पूरा या सम्पूर्ण करता है। मसीही व्यक्ति पीछे न मुड़े या छोड़कर न जाए उस के लिए आत्मिकता की खोज करना और परमेश्वर की गहरी सच्चाइयों की वफ़ादारी से समझ रखना आवश्यक है।

मसीह की गहराई की बातों को ग्रहण करके समझ वही सकता है जो ''सिद्ध'' हो, इसलिए इन मसीही लोगों के लिए सिद्धता की ओर बढ़ते रहना आवश्यक था। फिर से मूल बातों को सीखने की आवश्यकता के लिए उन्हें डांटने के बाद (5:12) लेखक को अपने पाठकों को एक बार फिर से उन्हें यह बातें सिखाने की उम्मीद होगी। इस के बजाय उस ने मसीह के महायाजक होने की बात को विस्तार देते हुए उनकी समझ को बढ़ा दिया।

''सिद्धता की ओर बढ़ते'' वाक्यांश का अर्थ *आत्मिक* परिपक्वता की कोशिश करना है। इस कोशिश में पाप रहित सिद्धता की बात नहीं है। हमारा लक्ष्य ऐसा ही होना चाहिए (फिलिप्पियों 3:12–15), परन्तु क्या कोई व्यक्ति इस जीवन में पाप पर पूरी तरह से काबू पा सकता है? यह प्रश्न तो ऐसा होगा जैसे ''कोई कितनी ऊंची छलांग लगा सकता है?'' रिकॉर्ड लगभग हर साल टूट जाता है परन्तु हम जानते हैं कि इसकी कोई सीमा अवश्य है। यहां जिसे *सिद्धता* माना गया है वह इस प्रकार से कहना है ''वह परफेक्ट [यानी सिद्ध] बच्चा है!'' यह कहने का हमारा अभिप्राय यह होता है कि उस बच्चे के सभी अंग हैं और पूरी तरह से एक सामान्य बच्चे वाले काम करता है।

किसी भी इमारत की मज़बूती के लिए **आरम्भ** यानी बुनियाद का होना आवश्यक है, पर बुनियद या नींव बनाते रहना कोई समझदारी नहीं होगी। कुछ लोग सुसमाचार की बुनियादी बातों पर चर्चा करते हुए यहां तक उस पर टिक जाते हैं कि परमेश्वर के वचन में पाए जाने वाले उक्त नियमों तक नहीं पहुंच पाते हैं (मत्ती 23:23)। कहने का मतलब यह नीं है कि सुसमाचार की मूल बातों को सिखाते नहीं रहना चाहिए। सच्चाई में अच्छी तरह से पकते नहीं हैं तो हर पीढ़ी के मसीही लोगों के फिर जाने का खतरा बना रहता है।

नकारात्मक दिशा में जाते हुए लेखक ने अपने पाठकों को, शिक्षा की आरम्भ की बातों को **छोड़** देने की आज्ञा दी। ''नींव'' और ''शिक्षा की आरम्भ की बातें'' एक ही बात होंगी, परन्तु

वे क्या हैं? इस वचन में उन्हें जोड़ों में दी गई छह चीज़ों के रूप में दिखाया गया है। पहली "दो यह आरम्भिक अनुभव हैं और अगली दो सांकेतिक अभिव्यक्तियां हैं और अगली दो भविष्य की घटनाएं हैं।"[4]

सूची का आरम्भ मसीही विश्वास को जीने की दो बुनियादी बातों से होता है: **मरे हुए कामों से मन फिराना** और **परमेश्वर पर विश्वास करने।**[5]

हमें पाप से मुक्त मसीही चाल चलने के हमारे निर्णय के आरम्भ में ही हमें मन फिराना (*metanoia*; "मन का बदलना") आवश्यक है। इसलिए मन फिराव मसीही जीवन की पहली परत यानी आधार है। यह आने वाले राज्य की तैयारी में यहूदी पृष्ठभूमि वाले लोगों को सुनाई गई आरम्भिक बातों में से था (मरकुस 1:4, 14, 15; प्रेरितों 2:38; 3:19; 5:31)।

"पछतावा" इस के जैसा ही शब्द है (*metamelomai*)। यहूदा के सम्बन्ध में मत्ती 27:3 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है: उस ने *"मन फिराया"* (KJV)। हिन्दी और NASB में "पछताया" है जो अधिक सही अनुवाद है। 2 कुरिन्थियों 7:7–10 में पौलुस द्वारा दोनों शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। जहां हाल के अनुवादों में अन्तर आसानी से देखने को मिलता है। सच्चे मन फिराव से उस तथ्य पर जिस से हमारे पाप ने परमेश्वर को ठोकर दिलाई है, यह जानते हुए कि यदि हम नहीं बदलते तो अनन्तकाल तक नाश हो जाएंगे पछतावा करना शामिल है (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30, 31)। सच्चे मन फिराव का पूरा चित्रण इस प्रकार है: मन फिराव व्यक्ति के मन और व्यवहार का बदलना, पाप के आत्म-त्याग में दिखाए गए जीवन की ओर जाने का निर्णय और परमेश्वर के दिन को तोड़ने के लिए अफ़सोस में उसकी ओर मुड़ना है। इसमें हमारे एक और केवल एक उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रभु पर निर्भरता के द्वारा पाप से जीने के एक नये ढंग की ओर मुड़ना है। ग्रेथ एल. रीस ने यह कहते हुए कि यह "पाप के लिए ईश्वरीय शोक से होने वाला मन का बदलाव और काम का बदलाव" इसे और सरल शब्दों में प्रभाषित किया है।[6]

प्रेरितों 3:19 में पापियों को कहा गया था "मन फिराओ और लौट आओ" (या "मुड़ आओ"; NIV)। प्रेरितों 2:38 से इसकी तुलना करते हुए हम देखते हैं कि मुड़ आने के काम के बाद पश्चात्ताप होता है। इस का अर्थ यह है कि मन फिराव या पश्चात्ताप मन का बदलना या इच्छा का बदलना होगा; ऐसे बदलाव के बाद वह पापों से मुड़ जाता है। इस का अर्थ यह है कि यह "मुड़ना" बपतिस्मा लेने के बराबर है।

"मरे हुए कामों" केवल यहां और 9:14 में मिलता है।[7] "मरे" शब्द आम तौर पर विश्वास (याकूब 2:17) या शरीर के लिए (रोमियों 8:10) और व्यक्ति की आत्मिक स्थिति के लिए लागू होता है (रोमियों 6:11; इफिसियों 2:1, 5; कुलुस्सियों 2:13)। "मरे हुए कामों" में बने रहना व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाता है (रोमियों 6:21–23)।

साइमन जे. किस्टमेकर का मानना था कि मरे हुए होने की स्थिति पिछले सारे पापों सहित "मृत्यु का कारण बनने वाले कामों से अपने विवेक को धो लेने" के लिए है।[8] "मरे हुए कामों" को केवल व्यवस्था की शर्तों के अधीन किए जाने वाले काम बताना बहुत अधिक सीमित करना लगता है। अच्छे कर्मों से अकेले चाहे उद्धार नहीं मिलता है परन्तु पाप से भरे काम आत्मिक मृत्यु का कारण भी बनते हैं। पापी के लिए मसीह में परिवर्तित होने पर ऐसे कामों से मुड़ना आवश्यक है।

इस सूची में दूसरी चीज़ ''परमेश्वर पर विश्वास'' है। यह विश्वास परमेश्वर में केन्द्रित है जिस ने पुराने नियम में पाई जाने वाली मसीह से सम्बन्धित सच्चाइयों को प्रकट किया। यहूदियों को प्रचार में मन फिराव और विश्वास दोनों महत्वपूर्ण भाग थे, परन्तु आम तौर पर पहले मन फिराव की बात की जाती थी (मरकुस 1:14, 15; प्रेरितों 20:21)। इब्रानी लोग परमेश्वर में पहले से विश्वास करते थे परन्तु उन्हें उसकी ओर मन फिराना और फिर यीशु में विश्वास लाना आवश्यक था। यह पत्री विश्वास को एक गतिशील शक्ति के रूप में दिखाती है जिस का अपना ज़ोर भरोसा रखने और आज्ञा मानने पर है। इस सक्रिय विश्वास के स्वभाव को 4:2; 6:12; 10:22, 38, 39; 12:2; 13:7 के साथ साथ अध्याय 11 में भी दिखाया गया है।

आयत 2. बताई गई अगली दो चीज़ें **बपतिस्मों** और **हाथ रखने** की सांकेतिक अभिव्यक्तियां हैं। मसीह की शिक्षा से सीखी जाने वाली सबसे पहली चीज़ों में बपतिस्मा ही था। परन्तु यहां प्रयुक्त बहुवचन शब्द (*baptismos* से) नये नियम के (*baptisma*) ''बपतिस्मा'' के लिए सामान्य शब्द नहीं है। इस तथ्य के कारण कई लोग यह मान लेते हैं कि यह शब्द यहूदियों के स्नानों या यहूदी धर्म में आने के बपतिस्मे के लिए है।[9] नये नियम में *baptismos* के रूपों का इस्तेमाल चार बार हुआ है (मरकुस 7:4, 5; इब्रानियों 6:2; 9:10)। मरकुस की दो आयतें स्पष्ट रूप में इसे पुराने नियम के स्नानों के लिए प्रासंगिक बनाती हैं। एफ. एफ. ब्रूस ने इसे ''अभिषेक'' या रस्मी नहाने के रूप में माना (देखें RSV)।[10] पुरातत्व से पता चलता है कि औसतन यहूदी घर में एक *miqva'ot* यानी धार्मिक अनुष्ठान के स्नानों के लिए एक कुंड होता था। पानी कुण्ड में ऊपर से गिरकर बाहर को निकल जाता था जिस से उपयुक्त स्नान के लिए ''चलता हुआ'' शुद्ध पानी मिल जाता था। फरीसी व्यक्ति को किसी अन्यजाति से लग जाने के कारण या किसी और प्रकार से अशुद्ध हो जाने पर, सफ़र से घर लौटकर ''नहाना'' आवश्यक होता था।

इस के अलावा, कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है कि यूहन्ना के आने से पहले यहूदियों को ''बपतिस्मो'' (स्नानों को छोड़ और) की आज्ञा दी गई हो। यदि बपतिस्मे आम होते थे तो उसे ''बपतिस्मा देने वाला'' या ''डुबकी देने वाला'' क्यों कहा जाता? उसकी पहचान से यह सुझाव मिलता है कि दूसरों को, विशेषकर यहूदियों को डुबकी देने वाला पहला वही व्यक्ति था। जैसे बपतिस्मे की यूहन्ना ने आज्ञा दी यहूदियों के लिए वह नया था। यहूदी बनने के लिए बपस्मिा लेने के मामले में परिवर्तित होने वाले अन्यजाति को डुबकी लेनी होती थी; यह न तो यूहन्ना के और न ही यीशु के बपतिस्मे से मेल खाता था।

ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा, एक प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति पाप के लिए मर जाता है (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16), यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने की तस्वीर बनाता है (रोमियों 6:3–5)। यदि बहुवचन शब्द ''बपतिस्मो'' में यूहन्ना का बपतिस्मा शामिल है तो यहूदी मत धारण करने के लिए लिया जाने वाला बपतिस्मा और पुराने नियम के स्नानों को ''मसीही शिक्षा'' या ''मसीह की शिक्षा'' कैसे माना जा सकता है (आयत 1)? ऐसे स्नान केवल मसीहियत की शिक्षाओं के लिए तैयारी के लिए हैं। उसी आधार पर कोई निष्कर्ष निकाल सकता है कि यहूदियों के संस्कार के सभी स्नान ''मसीही शिक्षा'' थे जबकि ऐसा नहीं हो सकता।

दूसरी ओर यूहन्ना के बपतिस्मे की बात करते हुए जोसेफ़स ने उसी शब्द *baptismos* का इस्तेमाल किया।[11] यह उस के द्वारा नाम देने में गलती हो सकती है परन्तु निश्चय ही उसे मालूम था कि यूहन्ना का बपतिस्मा कोई साधारण यहूदी स्नान नहीं था। यदि वह *baptismos* के अपने इस्तेमाल में सही था तो हमें निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि यहूदी स्नानों और बपतिस्मे के बीच अन्तर सदा नहीं होता था। किस्टमेकर ने सुझाव दिया कि *baptisma* एक ''यहूदी-मसीही शब्द'' है जिस में जैसा कि *baptismos* में है काम के होने के बजाय ''परिणाम वाला काम'' है।[12] यदि *baptismos* यदि यहूदी बपतिस्मों या स्नानों के लिए था (इब्रानियों 9:10; मरकुस 7:4, 5), तो इस शब्द का अर्थ इब्रानियों 6:2 में सीमित करना आवश्यक होना था। ''*Baptismos* शब्द चाहे आम तौर पर मसीही बपतिस्मे का संकेत नहीं देता परन्तु यहां पर यह शब्द उपयुक्त है क्योंकि बपतिस्मे के साथ साथ और स्नानों का भी ध्यान है।''[13] यह तथ्य कि बपतिस्मे को बुनियादी मसीही शिक्षाओं में डाला गया है कार्य के महत्व को दिखाता है (देखें 1 पतरस 3:21)।

इफिसियों 4:5 में पौलुस के यह कहने के बजाय कि ''एक ही बपतिस्मा'' है नये नियम में बपतिस्मों की बहुसंख्या देखी जा सकती है।[14] उस के कहने का अर्थ यह हो सकता है कि उस के इफिसियों की पत्री लिखने के समय विश्वास की एकता के लिए केवल एक ही बपतिस्मा प्रभावी और आवश्यक था। ग्रेट कमीशन में सब के मानने के लिए एक ही बपतिस्मे की आज्ञा दी गई थी। पौलुस की पुष्टि कि मसीही युग में केवल एक ही बपतिस्मा है, इस बात का संकेत है कि मसीह के बपतिस्मे ने यहून्ना के बपतिस्मे का स्थान ले लिया था (जैसा कि प्रेरितों 19:1-6 से स्पष्ट है)। परमेश्वर के उपाय में अन्य स्नान मसीह की शिक्षा की तैयारी के लिए हो सकते हैं। सुसमाचार सुना दिए जाने के बाद वे पीछे रह जाने थे।

अगली बात ''हाथ रखने'' की है। पुराने नियम की यह सामान्य रीति नये नियम के युग में किसी को आशीष दिए जाने के समय चाहे वह किसी विशेष शक्तियों से रहित व्यक्ति द्वारा (प्रेरितों 13:3) या ईश्वरीय सामर्थ पाए हुए व्यक्ति के द्वारा, जैसे मसीह या कोई प्रेरित द्वारा दी जाती थी। यह किसी के लिए प्रार्थना किए जाने पर, बलिदान भेंट किए जाने पर और किसी को किसी पद या कार्य के लिए नियुक्त किए जाने पर होता था। प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों के द्वारा हाथ रखे जाने पर, जो उस माध्यम के द्वारा आत्मिक दान दे सकते थे, उन के अधिकार को दिखाने के लिए इसे जोड़ा गया हो सकता है (प्रेरितों 6:6; 8:14-17; 19:1-6; रोमियों 1:11)। यीशु ने बच्चों को आशीष देने पर और बीमारों को चंगाई देने के समय उन पर हाथ रखे थे (मत्ती 19:13; मरकुस 5:23)। प्रेरितों ने भी बीमारों को चंगा करते समय (प्रेरितों 28:8), पद के लिए चुने हुए लोगों को नियुक्त करने (प्रेरितों 6:6; 1 तीमुथियुस 5:22) और आत्मा की आश्चर्यकर्म की शक्तियां देने के समय ऐसा ही किया था। प्रेरितों 8:14-17; 19:1-6 में इस के साथ प्रार्थना भी की गई थी।[15]

स्पष्टतया आत्मिक दान देने के लिए प्रेरितों के अलावा किसी और को यह सामर्थ नहीं दी गई थी। नया नियम यह नहीं बताता है कि आश्चर्यकर्मों के दान देने की सामर्थ कलीसिया के लिए जारी रहने वाला कार्य था। बपतिस्मा और प्रभु भोज निरन्तर रहने वाली आज्ञाएं हैं परन्तु आश्चर्यकर्मों के दान देना नहीं। प्रेरणा पाए हुए लोग जिन के पास आगे देने की शक्ति थी जब

वे मर गए तो हाथ रखना अनावश्यक हो गया। आज कोई भी हाथ रखकर अलौकिक शक्तियां नहीं दे सकता है। जो कोई भी ऐसी योग्यताएं होने का दावा करता है उसे प्रेरित की सब शक्तियों का इस्तेमाल करने के योग्य भी होना चाहिए, जिसमें मुर्दों को जिलाना भी शामिल है (प्रेरितों 9:36-42)।

बुनियादी शिक्षा की अन्तिम बातों में भविष्य की घटनाओं अर्थात **मरे हुओं के जी उठने और अन्तिम न्याय** की चिंता है।

''मरे हुओं'' (*nekrōn*) एक बहुवचन शब्द है। इस वचन में उन पवित्र लोगों सहित जो यीशु के जी उठने के बाद जी उठे थे, कई पुनरुत्थानों की बात हो सकती है (मत्ती 27:51-53)। लगता है कि शारीरिक पुनरुत्थान के विचार को अधिकतर यहूदियों द्वारा स्वीकार कर लिया गया था। कुलीन अल्पसंख्यक सदूकी इस का अपवाद थे (प्रेरितों 23:8)। परन्तु जैसा कि मत्ती 22:23-33 से यीशु की पूछताछ से संकेत मिलता है, इस विषय पर बहस होती थी। पुराने नियम के हवालों में अय्यूब 19:26, यशायाह 26:19 और दानिय्येल 12:2 थे जिन्हें पुनरुत्थान की शिक्षा की सफ़ाई के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था।

नये नियम के लेखकों के इस पर बड़ा ज़ोर देने के कारण मरे हुओं के जी उठने को नये नियम की शिक्षा के रूप में पहचान मिली है, परन्तु इसे यहूदियों में पाए जाने वाले तैयारी के विश्वासों से निकाला नहीं जा सकता। जी उठने की अवधारणा नये नियम में भरी पड़ी है (लूका 14:14; यूहन्ना 5:28, 29; 11:24, 25; प्रेरितों 17:18, 32; रोमियों 1:4)। यीशु के मुर्दों में से जी उठने से पहले भी चेलों की समझ में यही था।

मसीह का जी उठना हमारे अपने जी उठने में हमारे पक्के विश्वास का कारण है (प्रेरितों 17:31)। मूल सिद्धांतों की सूची में यह मान लिया जाता है कि पाठक मरे हुओं में से जी उठने में विश्वास रखते थे और उन्हें उस आरम्भिक शिक्षा से आगे बढ़ना आवश्यक था।

सूची में छठी बात ''अन्तिम न्याय'' की है। हमारे न्याय का सम्बन्ध सम्पूर्ण अनन्तकाल से है। परमेश्वर के कई न्याय अस्थाई होते हैं परन्तु मत्ती 25:31-46; प्रेरितों 17:30, 31 और 2 कुरिन्थियों 5:10 में सारी मनुष्यजाति के अन्तिम और अनन्त न्याय की बात बताई गई है। इन व और आयतों से यह स्पष्ट है कि ''हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे'' (रोमियों 14:10)। फेलिक्स के मन में इस विचार से बड़ा भय छा गया था (प्रेरितों 24:25) जैसे सुसमाचार को सुनने के साथ हर उत्सुक व्यक्ति को होना चाहिए।

जी उठने और न्याय के सम्बन्ध में हर मसीही का यकीन होना आवश्यक है, नहीं तो इस संसार की परीक्षाओं में से दुख सहने का कोई लाभ नहीं होगा। सुसमाचार के आरम्भ में आज्ञापालन में न्याय के दिन में विश्वास एक ज़बर्दस्त प्रेरणा है (रोमियों 2:3-6)। पुराने नियम में इस अवधारणा पर थोड़ी सी बात की गई है (सभोपदेशक 12:14)। पुराने नियम में परमेश्वर के कई नियम पाप के लिए अस्थाई दण्ड थे। उदाहरण के लिए इस्राएल को उन पर आने वाले न्याय में ''परमेश्वर के सामने'' की तैयारी करनी आवश्यक थी (आमोस 4:12)। अन्तिम न्याय इब्रानियों 9:27 में और स्पष्ट हो जाता है 12:25 में इसे और भी समझाया गया है।

नींव किसी भी इमारत की मज़बूती के लिए आवश्यक है। परन्तु नींव बनाने में ही सारा समय बिता देना समझदारी नहीं होगी। कुछ लोग सुसमाचार की बुनियादी बातों पर उन्हें यहां

तक चर्चा करते हुए बिता देते हैं कि परमेश्वर के वचन में पाए जाने वाले उस से ऊपर के नियमों में ध्यान नहीं देते (मत्ती 23:23)। कहने का अर्थ यह नहीं है कि सुसमाचार की बुनियादी बातों को बताते नहीं रहना चाहिए। हर नई पीढ़ी में मसीही लोगों को विश्वास से फिर जाने का खतरा रहता है यदि उनकी बुनियाद सच्चाई में अच्छी तरह से टिकी न हो।

आयत 3. यह भाग 6:1-3 **यदि परमेश्वर चाहे तो हम यहीं करेंगे** शब्दों के साथ खत्म होता है। लेखक के कहने का अर्थ अवश्य यह होगा, ''हम परमेश्वर की सहायता और स्वीकृति से सिद्धता की ओर बढ़ेंगे।'' ब्रूस ने सुझाव दिया है कि पत्र सिद्धता की ओर ले जाने वाली शिक्षा देते हुए आगे बढ़ा।[16] कुछ मसीही लोग जिन्हें इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी, सोचते होंगे कि वे यहूदी मत और मसीहियत, विश्वास के दोनों प्रबन्धों को पकड़े रख सकते हैं। इस कारण विश्वासत्याग का खतना काफिर से विश्वासी बनने वालों से बढ़कर उन के लिए अधिक होगा।

लेखक ने पाठकों को आत्मा की गहरी सच्चाइयों में ले जाना चाहा, परन्तु हर आत्मिक उन्नति परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर है। ''यदि परमेश्वर चाहे'' अभिव्यक्ति आरिम्भक मसीही कहावतों में एक पवित्र और उपयुक्त फार्मूला बन गया प्रतीत होता है।[17] हमारे साथ भी यही बात होनी चाहिए। ऐसी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करते हुए हम यह मानते हैं कि परमेश्वर सब पर राज करता है।

6:4-8

[4]क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। [5]और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं। [6]यदि वे भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं। [7]क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार-बार पड़ता है, पी-पीकर जिन लोगों के लिए वह जोती-बोई जाती है, उन के काम का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। [8]पर यदि वह झाड़ी और ऊंटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और छ्रापित होने पर है, और उस का अन्त जलाया जाना है।

इब्रानियों 6:4-8 सीधा हवाला है जो हमारे सामने एक भयानक सच्चाई लेकर आता है कि यदि हम ''सिद्धता की ओर'' नहीं बढ़ते तो विश्वास त्याग के खतरे या पूरी तरह से विश्वास से भटक जाने के खतरे में होंगे।

यह वचन विश्वासत्याग के खतरे की चेतावनी देता है। यह उन के लिए जिन का यह मानना है कि विश्वासत्याग असम्भव है एक बड़ी कठिनाई पैदा कर देता है। उन का सबसे प्रचल्लित ढंग यह बहस करना है कि ऐसे लोग वास्तव में कभी बदले ही नहीं थे। आरथर डब्ल्यू. पिंक ने चाहे माना कि असली मसीही के लिए भटक जाना असम्भव होगा परन्तु उस ने यह एक सही मूल्यांकन भी किया कि ''केवल [विश्वास का] दावा करने वालों के लिए 'भटक जाना' के लिए कोई बात नहीं है।''[18] कम से कम उस ने मान तो लिया कि इस विवरण में जिन लोगों की

बात हो रही है वह केवल विश्वास का दावा करने वाले होने से बढ़कर थे।

अन्यों ने कहा है कि मनपरिवर्तन का एकमात्र प्रमाण ''निरन्तरता'' है। हमारे वचन पाठ में जो संकेत देता है कि जिन लोगों की बात की गई है वे सचमुच में बदले थे जो भटक गए, इस तर्क का भी खण्डन किया गया है। बेशक हमें जीवन भर विश्वासी बने रहना आवश्यक है; परन्तु ऐसा करना केवल एक प्रमाण नहीं है कि कोई सचमुच में बदला था।

जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., जिस ने भटक जाने की असम्भावना का तर्क दिया, ने भी माना कि ''हम किसी बात में सिद्ध नहीं हो सकते यदि हम ने इसे आरम्भ ही नहीं किया है।''[19] इस वचन में जिन्हें बेदीन या विश्वासत्याग करने वाले बताया गया है उन्होंने मसीही जीवन का आरम्भ तो किया था, परन्तु वैसे बढ़ने में नाकाम रहे जैसे उन्हें बढ़ना चाहिए था। 10:26 में फिर से ऐसे लोगों को मसीह के बलिदान को जानबूझकर ठुकराने वाले बताया गया है। ऐसा करके उन्हेंने एक मात्र साधन को जिस के द्वारा मन फिराया जा सकता था निकाल दिया।

6:4–6 में बताए गए लोग वे नहीं थे जिन्हें प्रभु का कभी पता नहीं था, बल्कि मसीही लोग थे जिन्होंने अपने विश्वास को खो दिया था। विश्वासत्याग का खतरा ''काल्पनिक नहीं बल्कि वास्तविक है; नहीं तो इतने ज़ोर से ताड़नाएं देते हुए यह पत्री छोटी, बेकार, और बेतुकी मानकर खारिज कर दी जाती।''[20]

अफ़सोस की बात तो है परन्तु एक सच्चा मसीही मसीह की कहानी में अपने भरोसे को छोड़कर भटक सकता है (रोमियों 11:22; गलातियों 5:4)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक का यह विश्वास नहीं था कि एक बार किसी का उद्धार हो जाए तो उस का उद्धार सदा के लिए हो जाएगा। न ही उस का विचार यह था कि एक बार किसी का उद्धार हो जाए तो वह अन्त में प्रभु के पास लौट आएगा और उद्धार पाएगा। प्रेरणा पाए हुए लेखक का मानना था कि व्यक्ति फिर से अनन्तकाल के लिए खो सकता है और वैसा ही रह सकता है। वास्तव में उस ने उन मसीही लोगों की बात की जो ''भटक गए'' थे (आयत 6)।

कोई भी यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता कि यह लोग जो भटक गए थे केवल ''लगने को'' मसीही थे, क्योंकि उन्हें बहुत सी ईश्वरीय आशिषें भी मिली थीं। वह परमेश्वर के हाथ से इन आत्मिक आशिषों को प्राप्त करके उसी को धोखा दे सकते थे? ''आने वाले युग की सामर्थ'' केवल परमेश्वर दे सकता है (आयत 5)। ''सामर्थ'' के लिए इसी शब्द (*dunamis*) का अनुवाद 2:4 में ''सामर्थ के काम'' हुआ है। हम पूछते हैं, ''क्या परमेश्वर ने यह नकली मसीहियों को दिए होंगे?'' नहीं, उसे इस प्रकार से धोखा नहीं दिया जा सकता। इसलिए जिन लोगों की यहां बात है वह सच्चे विश्वासियों के रूप में राज्य में आए थे, फिर भी अपने विश्वास को खो सकते थे और भटक सकते थे।

आयत 4. बाद में अविश्वासी हो जाने वालों को दी गई परमेश्वर की बड़ी आशिषों में **ज्योति** का दान था। 2 कुरिन्थियों 4:3, 4 में इसे सुसमाचार के ''प्रकाश के चमकने'' के रूप में दिखाया गया है जिन पर प्रकाश नहीं चमका उन्हें शैतान द्वारा उलझन में डाला गया है। 10:32 के लेखक ने कहा, ''परन्तु उन पिछले दिनों का स्मरण करो, जिसमें तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे।'' वहां ''ज्योति पाकर'' 10:26 वाले ''सच्चाई की पहचान प्राप्त करने'' का समानार्थी लगता है। इस पत्री के लिखे जाने के समय सुसमाचार का प्रकाश जिस ने उनकी

आत्माओं को कभी भर दिया था पाप के अंधकार से उस के ऊपर पर्दा पड़ गया था।

यीशु जगत की ज्योति है (यूहन्ना 8:12), और जो कोई उस ज्योति में है वह सचमुच में बदल गया है। यदि वह ज्योति में चलता रहता है (1 यूहन्ना 1:7) तो मसीह के लहू के द्वारा उसे क्षमा मिलती रहेगी। ज्योति में चलने की कोशिश करते हुए कोई अनजाने में पाप कर सकता है। यदि वह अपने दोष से अनजान है तो वह अपने पाप का अंगीकार नहीं कर सकता। ऐसा होने पर यीशु का लहू उस के पाप को शुद्ध करता रहता है। बेशक पाप का पता होने पर इसे मान लेना आवश्यक है (1 यूहन्ना 1:8–10)। ''पाप ... जिस का फल मृत्यु है'' (1 यूहन्ना 5:16) वही पाप होगा जिसे कोई भाई मानता नहीं है, क्योंकि हर पाप जिसे मान लिया जाता है क्षमा किया जाएगा (1 यूहन्ना 1:9)। विनम्र और पश्चात्तापी व्यक्ति यह जानते हुए कि हो सकता है कि उसे अपने हर पाप का पता न हो, क्षमा मांगता रहेगा। इफिसियों 5:8 में पौलुस ने उन लोगों का संकेत दिया जो ''पहले अंधकार थे,'' परन्तु उस के लिखने के समय ''प्रभु में ज्योति'' थे। कुलुस्सियों 1:13 उन लोगों की बात करता है जिन्हें ''अंधकार के वश से'' छुड़ाया गया था।

जो मसीह में ओ गया है उस ने **स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख** लिया है। जो लोग अनुग्रह से गिरने की सम्भावना से इनकार करते हैं उन का कहना है कि यहां जिन लोगों की बात की गई है उन्होंने केवल ''चखा'' परन्तु वास्तव में कभी उद्धार नहीं पाया। इब्रानियों 2:9 में यीशु के मृत्यु का ''दुख उठाने'' अर्थात स्वाद चखने के द्वारा गलत ठहराया गया है। दोनों आयतों में ''रखना'' के लिए एक ही शब्द (*geuomai*) का इस्तेमाल किया गया है। यह सच है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय ''पित्त मिलाया हुआ दाखरस'' यीशु के चखने (परन्तु निगनले के लिए नहीं) इस्तेमाल हुआ है (मत्ती 27:34) परन्तु इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग अलग किया गया है। क्या उस ने केवल मृत्यु को ''चखा'' या उसे पूरी तरह से अनुभव किया? स्पष्ट रूप में इब्रानियों के लेखक के लिए ''चखना'' का अर्थ किसी चीज़ को पूरी तरह से आत्मसात कर लेना या ग्रहण कर लेना था। इस शब्द का अर्थ किसी चीज़ में पूरी तरह से भागीदारी करना है।[21] इस का अर्थ ''चखी गई'' अपना भाग बना लेना है। ''परमेश्वर के उत्तम वचन का स्वाद चख'' लेने (आयत 5) का अर्थ इसे पूरी तरह से अपने स्वभाव में मिला लेना है।

''स्वर्गीय वरदान'' मसीह में मिलने वाला उद्धार होगा जो कि वह नया जीवन है जिसे केवल वही दे सकता है (रोमियों 6:23)। उन्होंने इस वरदान को पाया था इस कारण जिनकी बात की गई है वे वास्तव में बदल गए थे। कुछ लोग इस वरदान की व्याख्या पवित्र आत्मा के रूप में करते हैं परन्तु यह इस वचन में अनावश्यक दोहराव होगा क्योंकि आगे लेखक ने बताया कि उन्हें ''पवित्र आत्मा के भागी'' बनाया गया था। यीशु ने कहा कि आत्मा को पाने वाले उस में से ''पीते'' हैं (यूहन्ना 7:37–39)। यह 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस द्वारा दोहराया गया विचार है। जब हम मसीह में विश्वास रखते हैं, हमें उस से नया जीवन मिलता रहता है। यूहन्ना 5:24 तथा अन्य वचनों में काल से पता चलता है कि ''विश्वास करते रहना'' आवश्यक है। मसीही लोग वर्तमान में ''अनन्त जीवन की आशा'' है (तीतुस 1:2)। पौलुस ने घोषणा की कि व्यक्ति किसी चीज़ की आशा तब तक करता है जब तक वह उस के पास होती नहीं है, परन्तु जब उसे वह मिल जाती है तो आशा खत्म हो जाती है (रोमियों 8:24, 25)। उसकी आशा का पूरा होना और मिलना यीशु के आने से होता है (इब्रानियों 9:27, 28)। ''वरदान'' के

लिए यहां पर इस्तेमाल हुआ शब्द (*dōrea*) का इस्तेमाल नये नियम में लगभग विशेष रूप में ''[आत्मिक] दानों'' के लिए हुआ है।[22] परन्तु यूहन्ना 4:10 में हम इसी शब्द के इस्तेमाल को देखते हैं जहां इस का अर्थ ''उद्धार का दान'' हो सकता है।

एक और आशीष **पवित्र आत्मा के भागी** होने की थी। संसार पवित्र आत्मा को ग्रहण नहीं कर सकता (यूहन्ना 14:17) परन्तु मसीही लोगों को उस का वचन दिया गया है (गलातियों 4:6; देखें रोमियों 8:9)। यीशु ने हर सच्चे विश्वासी को आत्मा की प्रतिज्ञा दी (यूहन्ना 7:37-39), परन्तु उसे स्वर्ग में वापस जाकर मसीह के ''महिमा पाने'' से पहले नहीं दिया जा सकता था, पतरस ने प्रेरितों 2:38 में पवित्र आत्मा के दान की पेशकश की। यह स्पष्ट है कि आत्मा विश्वास के द्वारा दिए जाने की पेशकश की गई थी (गलातियों 3:1, 2, 14), जैसे कि मसीह भी हम में वास करता है (इफिसियों 3:17)।

आरम्भिक कलीसिया द्वारा आत्मा के वरदान को कैसे समझा जाना था? प्रेरितों 5:32 कहता है कि पवित्र आत्मा ने स्वर्ग में मसीह के महिमा पाने की गवाही दी और प्रेरितों ने भी वैसा ही किया। आत्मा ने बेशक इस महिमा पाने को प्रेरितों के द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों के द्वारा दिखाया। पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में पतरस ने आगे कहा, ''... जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं'' (प्रेरितों 5:32)। यह तो साफ़ है कि प्रेरितों को आश्चर्यकर्म करने की ऐसी शक्तियां मिली थीं (देखें प्रेरितों 2:43; 3:1-9; 5:1-12) और उन्होंने वे शक्तियां उन्हें आगे दे दी जिन्होंने सुसमाचार की आज्ञा मानीं (प्रेरितों 8:14-17; 19:1-6)। परन्तु यीशु ने आत्मा के अलौकिक दानों का वायदा केवल प्रेरितों से किया था (यूहन्ना 14:26; 15:26, 27; 16:12, 13)। यदि हम दावा करते हैं कि प्रेरितों और अन्यों को जिन आश्चयकर्म करने की शक्तियों की प्रतिज्ञा की गई वे सब मसीही लोगों को दी जाती है तो हम इन आयतों का दुरुपयोग करते हैं।

प्रेरितों 10:45, 46 में ''पवित्र आत्मा का दान'' में भाषाएं बोलना भी था। जो कि निश्चित रूप में आत्मा के द्वारा आश्चर्यकर्म से दी जाती हैं। यह दान पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा की सामर्थ पाने के बाद सबसे पहले प्रेरितों को मिला था (प्रेरितों 2:4, 6-8)।

ध्यान दें कि प्रेरितों 8 अध्याय में सामरी लोग अभी भी पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा कर रहे थे चाहे उन्होंने प्रेरितों के आने से पहले विश्वास करके बपतिस्मा ले लिया था। आत्मा की सामर्थ उन्हें पतरस और यूहन्ना के आकर उन पर पवित्र आत्मा के उतरने के बाद ही मिली थी। ऐसे दान को पाने के लिए स्पष्टतया उन के ऊपर आत्मा के आने के लिए किसी प्रेरित का वहां होना आवश्यक था। फिलिप्पुस जो सामरिया में पहले ही आश्चर्यकर्म कर रहा था, के पास ''पवित्र आत्मा का दान'' आगे देने की सामर्थ नहीं होगी, नहीं तो वह पहले ही यह सामर्थ दे चुका होता। आत्मा की आश्चयकर्म करने की सामर्थ (ऊपर से बहाए जाने के द्वारा या प्रेरितों के हाथ रखने से) प्रेरितों 2 अध्याय से प्रेरितों 11:15 में बताए समय तक, कुरनेलियुस के घर, सीधे नहीं मिली थी। पतरस ने कहा, ''पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।'' इस बीच ऐसी कोई घटना नहीं घटी इस कारण पतरस ने इस घटना को प्रेरितों 2:1-4 में घटी ''आरम्भ'' की घटना से मिलाया।

बाद में प्रेरितों 19:1-7 में पौलुस ने इफिसुस में बारह के लगभग पुरुषों को यीशु का

बपतिस्मा देने के बाद उन्हें पवित्र आत्मा का दान दिया। ''यूहन्ना का बपतिस्मा'' उन्हें यूहन्ना के अलावा किसी और व्यक्ति द्वारा सिखाए और दिए जाने से मिला होगा (सम्भवतया अपुलोस)।

आश्चर्यकर्मों के द्वारा सुसमाचार की पुष्टि किया जाना बंद हो चुका है। परन्तु जैसा कि इफिसियों 5:17, 18 में आज्ञा दी गई है आत्मा से परिपूर्ण होना आज्ञा मानने के द्वारा हो सकता है। यह ''परिपूर्ण होना'' केवल उस मसीही में हो सकता है जो आज्ञा मानते हुए सक्रिय है। इस कारण यह तय करने के लिए कि यह आश्चर्यकर्म है या आज्ञाकार विश्वास का स्वाभाविक परिणाम, व्यक्ति को हर वचन का मूल्यांकन ध्यान से करना आवश्यक है, जो मसीही लोगों में आत्मा की गतिविधि की बात करती है।

मसीही व्यक्ति को आत्मा की उपस्थिति का पता उस के वचन के प्रकाशन के द्वारा चलता है, जो कि विश्वास दिलाता है (रोमियों 10:17)। यह किसी भी प्रकार से यह सुझाव नहीं देता है कि आत्मा ही वचन *है*, परन्तु पापियों और पवित्र लोगों के मनों में आत्मा का प्रभावकारी कार्य उसकी ''तलवार'' के द्वारा ही होता है (इफिसियों 6:17)। ज़बानी हो या लिखित, परमेश्वर के वचन में हृदय को भेदने (प्रेरितों 2:37) और इसे सुनकर दिलाए गए यकीन के द्वारा हमें बदलने की सामर्थ है (यूहन्ना 16:8; इब्रानियों 4:12, 13)। यीशु ने कहा, ''आत्मा तो जीवनदायक है,'' परन्तु उस ने आगे कहा कि ''शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी है'' (यूहन्ना 6:63)। इस प्रकार हम देखते हैं कि आत्मा से मिलने वाला नया जीवन यीशु के वचनों के द्वारा मिलता है। उस के वचन के द्वारा हमारे जीवनों में और हमारे अन्दर उस का पवित्र करने का काम आत्मा का प्रमाण है (प्रेरितों 20:32)। हमें यह प्रमाण अन्य भाषाओं में बोलने या बीमारों को चंगा करने के किसी आश्चर्यकर्म के दान के द्वारा नहीं मिला है, जो कि पहली सदी में आम दिए जाते थे।

हमारी भलाई के लिए आत्मा जिस प्रकार से संसार के विरुद्ध निर्णय देता है जिसे हम ''ईश्वरीय उपाय'' कहते हैं, परमेश्वर के कुल मिलाकर काम करने का एक और क्षेत्र है। लोगों के सुसमाचार को सुनकर मानने के द्वारा वह मनपरिवर्तन और पवित्र करने में काम करता है। हमें आत्मिक उन्नति के माध्यम में जो वचन में हमारे विश्वास (1 पतरस 2:1, 2) और हमारे लाभ के लिए उस के उपाय करने के द्वारा आता है, अन्तर करना आवश्यक है (रोमियों 8:28)।

''पवित्र आत्मा के भागी'' वाक्यांश आत्मा की आशीष पाने वाले लोगें के भी फिर से पाप में गिर जाने की सम्भावना को दिखाता है। हम जानते हैं कि अन्यजातियों के साथ पतरस के व्यवहार के कारण एक अवसर पर उसे गलत ठहराया गया था (गलातियों 2:11)। स्पष्ट रूप में ''पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बंधन में'' पड़ने के लिए लालची स्वभाव के उससे पाप करवाने से पहले शमौन जादूगर को शक्तियां मिली हुई थीं (प्रेरितों 8:18-24)।

आयत 5. अगला वाक्यांश है **और परमेश्वर के उत्तम वचन का ... स्वाद चख चुके हैं**। यहां ''वचन'' (*logos*) नहीं है जिस का इस्तेमाल नये नियम में कई बार मसीह के लिए (यूहन्ना 1:1, 2, 14) और आम तौर पर सुसमाचार के लिए हुआ है। इस के बजाय ''वचन'' के लिए सामान्य शब्द *rhēma* है। इसे उस के लिए भी कहा जा सकता है जिसे परमेश्वर ने बोला है। आम तौर पर *logos* और *rhēma* मिलते जुलते अर्थों वाले लगते हैं। *Rhēma* मसीह और उस के काम से सम्बन्धित सभी बातें हो सकती हैं। नील आर. लाइटफुट ने सुझाव

दिया है कि यह "शुभ समाचार" या सुसमाचार के बराबर हो सकता है।[23] इस "शुभ वचन" के आज्ञापालन से हमें पवित्र किया जाता है (चाहे यूहन्ना 17:17 और प्रेरितों 20:32 में पवित्र करने वाला "वचन" *logos* है जिस का इस्तेमाल 1 पतरस 1:22, 23 में भी हुआ है)। इस वचन के "स्वाद" चखने का अर्थ सच्चाई के इस के संदेश और हमारे इस के आज्ञा मानने के द्वारा उद्धार पाने वाले विश्वास और आशा तक लाना है (इब्रानियों 5:8, 9)। इस सच्चाई के द्वारा हमें शुद्ध किया जाता और नया जन्म दिलाया जाता है। पौलुस ने कुरिन्थियों को कहा कि "मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ" (1 कुरिन्थियों 4:15; NASB)। KJV में है "सुसमाचार के द्वारा जन्म दिलाया।"

परमेश्वर के "उत्तम वचन का स्वाद चख[ने]" के द्वारा पाया हुआ विश्वास "आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी हुई वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)। वह विश्वास अपने आप में, जब कोई सुसमाचार को सुनकर विश्वास लाता है, अनन्त छुटकारे का सबसे बड़ा आश्वासन दिलाता है!

जिन लोगों की बात हो रही है उन्होंने किसी प्रकार से **आने वाले युग की सामर्थ** को पाया था। "सामर्थ" (*dunamis*) वही शब्द है जिस का इस्तेमाल 2:4 में आश्चर्यकर्म करने के सम्बन्ध में हुआ है। "आने वाले युग" एक सामान्य अभिव्यक्ति थी जिस का अर्थ आम तौर पर "मसीहा का युग" था। इस अभिव्यक्ति के अलग अलग रूप नये नियम में छह बार मिलते हैं जिन में तीन बार सुसमाचार के विवरणों में (मत्ती 12:32; मरकुस 10:30; लूका 18:30) और तीन बार पत्रियों में (इफिसियों 1:21; 2:7; इब्रानियों 6:5)।

"आने वाला युग" यदि अभी भविष्य में था तो हमें पूछना आवश्यक है कि "जो बात अभी भविष्य में है, हम उसे कैसे अनुभव कर सकते हैं?" इस के लिखे जाने से पहले पाठकों ने इन में से कुछ शक्तियों को पहले ही पा लिया था। यदि कुछ अभी भी भविष्य में था तो उन्होंने "विश्वास के द्वारा" इसे पाया होगा। उदाहरण के लिए अब्राहम ने भविष्य की ओर देखते हुए मसीह के दिन को देखा (यूहन्ना 8:56)। वास्तव में उस ने स्वर्ग को इस के कभी निकट आने से पहले देख लिया था (इब्रानियों 11:10)। मूसा ने परमेश्वर को "अनदेखे को मानों देखते हुए" देखा (11:27)। यहां इस संदर्भ में जो भी शक्तियां थीं वे "पवित्र आत्मा के भागी" होने से कुछ अलग थीं।

आयत 6. यदि वे भटक जाएं **परमेश्वर के अनुग्रह के गिरने की सम्भावना को दिखाता है।** RSV में है "तो *यदि* वे विश्वसत्याग करें" और NIV में है "यदि वे गिर जाएं।" लाइटफुट ने कहा है कि लेखक पाठकों को उन से पहले जो कुछ दूसरों के साथ हुआ था उसकी चेतावनी दे रहा था।[24] एलबर्ट बार्नस की सोच के उलट, जिस ने कहा कि यह कभी नहीं हो सकता,[25] यह उन लोगों की बात है जिन का किसी समय उद्धार हो गया था परन्तु वे गिर गए थे। किसी के लिए इन सभी आशिषों को पाना जो मसीह में सच्चे मन से बदलने का संकेत देता है और फिर विश्वास और अनुग्रह से गिर जाना सम्भव है।

उन कुछ लोगों के सम्बन्ध में जिन का "विश्वास रूपी जहाज़ डूब गया" था, दी गई 1 तीमुथियुस 1:19 की बात को इस चेतावनी से मिलाया जा सकता है। यहां पूर्ण विश्वासत्याग की बात कही गई है। इब्रानी लोग पीछे हट जाने के दोषी थे। परन्तु वे विश्वासत्याग यानी बेदीनी

के दर्जे तक नहीं पहुंचे थे।

कुछ लोगों के **मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना** होने की बात क्यों कहीं गई है ?[26] हमारे वचन पाठ में बताए गए बेदीनों को इतनी आशिषें मिलीं थीं कि आत्मिक मामलों के प्रति उनकी उदासीनता ऐसी थी जैसे **वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते** [रहे थे] **और प्रकट में उस पर कलंक लगाते** [रहे थे]। वर्तमान काल की ओर ध्यान दें जिस का संकेत यूनानी कृदंत *anastaurountas* (*anastauroo* से ''क्रूस पर चढ़ाते'') से मिलता है। उन के मनों की स्थिति ने इस कार्य को चलते रहने से लेकर सच्चे मन फिराव की सम्भावना को खत्म कर दिया। परन्तु यदि ''क्रूस पर चढ़ाते'' रहना बंद करना था तो उन्हें ''मन फिराव के लिए नया बनाना'' और विश्वासत्याग के अन्त से बचना चाहिए था। उन्हें मसीह पर ''कलंक'' नहीं लगाना चाहिए था। यहां ''कलंक'' के लिए शब्द मरियम के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द ही है जब यूसुफ़ ने उसे छोड़ देने और उसे ''बदनाम'' (*paradeigmatizō* से) न करने का निर्णय लिया था।

''क्योकि'' में (वर्तमन कृदंत को ध्यान में रखते हुए) ''जबकि'' शब्द जोड़ा जा सकता है। ऐसी व्याख्या के साथ भी जैसे व्यक्ति की बात की गई है उसकी सम्भावना मध्यम थी।

जिन आत्माओं की यहां बात हो रही है वे ''पीछे हटने वाले'' संघर्ष करने वाले नहीं थे, बल्कि पूरी तरह से बेदीन थे। इन दोनों में अन्तर किया जाना आवश्यक है। बेदीन को ''श्रापित'' माना जाए (गलातियों 1:8, 9)।

वह इतना आशाहीन क्यों है ? क्योंकि उस ने अपने मन को यहां तक कठोर होने दिया कि वह मन नहीं फिरा सकता है। ऐसे व्यक्ति दण्ड के योग्य हैं क्योंकि वे केवल मसीह में विश्वास ही नहीं कर पाए बल्कि उन्होंने उसे संसार के सामने कलंकित किया है। उन का विश्वास त्याग हमारे प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का मज़ाक है। परमेश्वर ऐसे कठोर पापियों में से बदलने वाली अपनी सामर्थ को निकाल देता है।[27] विद्रोही को झुण्ड में रहने देने से उद्धारकर्त्ता ने कलंकित होना था। वे अपने आपको उन लोगों के साथ रखते हैं जिन्होंने क्रूस पर यीशु को ठट्ठे किए थे। अविश्वासी मसीही मसीह को वास्तव में फिर से क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते क्योंकि वह तो स्वर्ग में विराजमान है परन्तु उन के काम उसे पेड़ पर कीलों से ठोकने और ठट्ठा करने के जैसे ही हैं।

मन फिराव इस पवित्र जन के जीवन में स्वाभाविक और प्रतिदिन होना चाहिए। ज़रा सा भी संकेत कि उस ने किसी दूसरे को बिना सोचे समझे कुछ कहा है, गलती की है, या उस के साथ दुर्व्यवहार किया है, तो एक पवित्र जन के लिए यह कहना एक आम बात है, ''क्षमा करना। मेरा मकसद आपको दुख पहुंचाना नहीं था,'' और यह सच्चे दिल से है। कठोर हुआ पीछे मुड़ने वाला व्यक्ति अपने प्रभु के प्रति ऐसे मन को नहीं दिखाता है; वह वहां तक पहुंच गया है जहां वह अपने पापों के लिए शर्मसार नहीं होता। वह चाहे दण्ड से बचना तो चाहता हो सकता है पर बच नहीं सकता।

यह सुझाव देना बहुत ही ज्यादती होगी कि पिछे हट जाने वाले किसी पापी के लिए मन फिराव का कोई अवसर नहीं है, जैसा कि प्राचीन कलीसिया में कुछ लोग सिखाते थे। यह 1 यूहन्ना 1:7-10 का उल्लंघन होगा और इस का अर्थ यह होगा कि परमेश्वर के बालक के बजाय किसी बाहरी पापी के लिए अधिक दया होती है। सचमुच पाप से निपटने और फिर पूरी

तरह से दोबारा उसमें पड़ जाने वाले की "पिछली दशा पहले से भी बुरी हो गई है" (2 पतरस 2:20-22)। यदि ऐसे व्यक्ति कभी बदले न होते तो उन्होंने "आरम्भ" में कभी बचना नहीं था और उनकी कोई "पिछली दशा" नहीं होनी थी।

क्या मसीही लोग बहाली की आशा के बाहर गिर सकते हैं? क्या "मन फिराव के लिए फिर नया होना अनहोना है?" कुछ लोगों का मानना है कि यह वाक्य बहुत ही कठोर है और इसे "यह कठिन है" कहकर नरम बनाया गया है।[28] अन्यों ने "अनहोना" के साथ "मानवीय रूप में" शब्द जोड़ते हुए जैसे इस का अर्थ यह हो, "कोई उस व्यक्ति को मन फिराव के लिए वापस नहीं ला सकता, परन्तु परमेश्वर ला सकता है।" इस कथन को और भी नरम बना दिया है। परन्तु वचन में "मानवीय रूप" में जैसी कोई अवधारणा नहीं मिलती है; इस वचन का अनुचित व्यवहार चेतावनी की वास्तविकता का व्यवहार करता है। वचन यह गारंटी देता है कि सचमुच में विश्वासत्याग करने वाला व्यक्ति जो कभी सचमुच में परिवर्तित हुआ था[29] इतना कठोर हो सकता है कि वह कभी विश्वास में वापस न आए। ईश्वरीय और मानवीय दोनों दृष्टिकोण से यह सच है क्योंकि प्रेरणा पाए हुए लेखक द्वारा इसे तथ्य बताया गया है! जैसे लोगों का यहां वर्णन किया गया है उन के लिए सचमुच पश्चात्ताप अनहोना है।

"अनहोना" शब्द का अर्थ कुछ लोगों ने यह निकाला है जिसे परमेश्वर द्वारा तो प्राप्त किया जा सकता है परन्तु मनुष्य द्वारा नहीं, जैसे ऊंट के "सुई के नाके में से" निकलना (मरकुस 10:25-27)।[30] अन्यों का मानना है कि हमारे वचन का अर्थ केवल यह है कि साथी मसीही विश्वासत्याग करने वालों को मन फिराने के लिए मना नहीं सकते। इब्रानियों की पुस्तक में "अनहोना" शब्द के इस्तेमाल पर और अध्ययन होना आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक कहती है कि परमेश्वर के लिए *अनहोना* गलत है (6:18), कि पशुओं के बलिदानों का पाप से शुद्ध करना सम्भव नहीं हो सकता (10:4), और बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना *अनहोना* है (11:6)। गिर जाना एक वास्तविक खतरा है न कि "काल्पनिक असम्भावना।" यह विश्वासत्याग स्वभाव में पूरी तरह से है क्योंकि एक और जगह हम पढ़ते हैं कि पश्चात्तापी मसीही जो अपने पाप को मान लेता है परमेश्वर के पास लौट सकता है (1 यूहन्ना 1:7-10; 2:1, 2; गलातियों 6:1, 2)। यूहन्ना 21:15-19 और लूका 24:54-62 में पतरस के मामले पर विचार करें।

एक बिन्दु होता है जहां से लौटा नहीं जा सकता। जो व्यक्ति ढीठ होकर पाप में बना रहता है वह अपने आपको ऐसी स्थिति में डालता है जहां परमेश्वर का अनुग्रह भी उस तक नहीं पहुंचता। अन्य आयतें "पवित्र आत्मा की निंदा" से सम्बन्धित इसी सच्चाई को बताती हैं (मत्ती 12:31, 32; देखें मरकुस 3:28, 29)।[31] इब्रानियों 10:26-29 में भी इसी नियम का संकेत है।

आयतें 7, 8. यह समझाने के लिए कि किसी को सुसमाचार का पता चलने पर क्या हो सकता है एक प्रसिद्ध कृषि के दृश्य का प्रयास किया गया है।

भूमि के दो क्षेत्रों में तुलना की गई है जिन में दोनों में एक ही तरह की मिट्टी है और एक ही तरह की उन्हें **वर्षा** मिलती है, परन्तु एक ही तरह के **साग पात** नहीं उगाती है। भूमि के एक टूकड़े में किसी कारण **झाड़ी और ऊंटकटारे** उग आते हैं। इसी प्रकार से मसीही लोगों को एक जैसी आशिषें मिली सकती है पर इस के बावजूद कुछ लोग अनुग्रह में बढ़ते है परन्तु दूसरे लोग

पाप में गिर जाते हैं। हर कोई **परमेश्वर से आशीष** को स्वीकार करने के ढंग के लिए ज़िम्मेदार है। किसी के लिए परमेश्वर की दी हुई आशिषों को अपने नैतिक चरित्र को बदले बिना उन से अधिक योग्य होने के लिए आनन्द लेना कितना घिनौना है! आयतें 4 से 6 में बताई गई आशिषों को प्राप्त करके, प्रभु को जिस ने उन्हें वे आशिषें दीं, ठुकराने वाले और दण्ड के सिवाय और किसी बात के हक्कदार नहीं हैं।

यशायाह 5:1–10 और यिर्मयाह 2:21 में मनुष्यों की तुलना पौधों से की गई है। परमेश्वर फल देने वाली भूमि और लोगों को आशीष देता है ताकि वे और फल लाएं। इस से यूहन्ना 15:2 में यीशु की शिक्षा का ध्यान आता है: ''जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले।''

किसान के परिश्रम के बावजूद कुछ भूमि बेकार होती है और झाड़ियों के बिना कुछ और फल नहीं देती जिन्हें केवल **जलाया जाना** ही सही होता है। यीशु ने फलहीन विश्वात्याग करने वाले के लिए ऐसा ही होने की बात की (यूहन्ना 15:5, 6)। फलहीन शाखाओं को आग में डाले जाने पर ज़ोर इतना आम है कि इसे सचमुच होने वाली घटना के रूप में देखा जाना आवश्यक है।[32]

ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं का आश्वासन (6:9–20)

6:9–12

[9]पर हे प्रियो यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तौभी तुम्हारे विषय में हम इस से अच्छा और उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं। [10]क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुमने उस के नाम के लिए इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो। [11]पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिए ऐसा ही प्रयत्न करता रहे। [12]ताकि तुम आलसी न हो जाओ; वरन उस का अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

अपने पाठकों को परमेश्वर से दूर होने के खतरे के विरुद्ध चेतावनी देने के बाद लेखक ने अध्याय 3 की तरह अपने संदेश को सकारात्मक दिशा में मोड़ दिया। यदि आयत 6 वाले बेदीन यानी विश्वासत्याग करने वाले परमेश्वर के पुत्र का तमाशा बना रहे थे तो 6:9–12 में जिसकी बात की गई है वे इस का उलट कर रहे थे। उन्होंने उस के नाम के लिए प्रेम और महिमा से उत्तर दिया था। हर मसीही को इस भाग में दी गई ताड़नाओं को दिल से लेना चाहिए।

आयत 9. लेखक पाठकों को उच्च गुणों को पाने का प्रयत्न करते रहने का इच्छुक था। आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए उन्हें **अच्छी और उद्धार वाली बातों** पर ध्यान लगाना आवश्यक था।

हम शब्द का इस्तेमाल करके लेखक ने कई बार आपने आपको प्राप्तकर्त्ताओं के साथ (2:1, 3; 3:6 में) मिलाया और कई बार सब मसीही लोागों के साथ मिलाया जैसा कि अध्याय 4 में ''हम'' शब्द में भी है। कई बार ''हम'' प्रचारक के रूप में अपने और अपने सुनने वालों के

लिए इस्तेमाल किया गया लगता है (जैसे 2:5; 5:11; 9:5 में)। अन्य समयों में लेखक दो या अधिक लोगों को मिला रहा हो सकता है जो पत्र लिखने में उस के साथ भागीदार थे। 13:18 के साथ साथ 2:5 में भी ऐसा ही हो सकता है। 6:9 में लेखक अपने लिए और कम से कम एक और व्यक्ति के लिए बात कर रहा लगता है।

यहां पहली बार प्राप्तकर्त्ताओं को **हे प्रियो** कहा गया है। यह शब्द सामान्य शिष्टाचार से बढ़कर है जिसमें लेखक इन लोगों के प्रति भावना की सच्ची गरमाहट को दिखाता है। भाइयों के लिए अपने प्रेम को उन के दिखाने के ढंग के कारण (आयत 10) वे "हे प्रियो" कहलवाने के हक्कदार थे। लेखक ने चाहे कठोर भाषा में उन्हें **ये बातें** कहीं (6:4-6), पर उस ने ऐसा प्रेम से किया था ताकि वे खतरों से सावधान हो सकें। उसे इब्रानी मसीही लोगों के अच्छे गुणों का **भरोसा** था जैसे पौलुस को भरोसा था कि रोमी भाई "भलाई से भरे" थे (रोमियों 15:14)।

"उद्धार वाली" वाक्यांश यह सुझाव देता है कि यह मसीही अभी भी उद्धार पाए हुए होने की स्थिति में थे, चाहे वे वैसे नहीं बढ़े थे जैसे उन्हें बढ़ना चाहिए था। उद्धार पाकर उन्होंने सच्चे विश्वास और परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा को बरकरार रखा था। परन्तु 6:4-6 में दी गई बड़ी आशा के बाद प्रोत्साहन की आवश्यकता थी।

"उद्धार वाली बातों" का अर्थ वे गुण हो सकते हैं जो स्वाभाविक रूप में उद्धार से मिलते हैं जैसे फल देने और विश्वास में बढ़ना। यह मत्ती 25:34-40 में प्रतिज्ञा किए अनुसार परोपकार के पुरस्कार की बात भी हो सकती है। मत्ती 25 अध्याय चाहे यह नहीं बताता कि कर्मों से उद्धार कमाया जा सकता है, परन्तु वचन अनन्त प्रतिफल के दर्जों का सुझाव देता है। निश्चय ही वफ़ादारों को बड़ी सेवा के लिए बड़ा प्रतिफल मिलेगा नहीं तो तोड़ों के दृष्टांत का कोई अर्थ नहीं है (मत्ती 25:14-30)। हर व्यक्ति का न्याय "उस के कामों के अनुसार" होगा (रोमियों 2:6; देखें प्रकाशिवाक्य 20:12)।

आयत 10. परमेश्वर अन्यायी नहीं, यह कहने का कि "परमेश्वर पूरी तरह से धर्मी है" ज़बर्दस्त ढंग है। वह हमारे भले **काम**[ों] को चाहे वह चेले के रूप में ठण्डे पानी का गिलास ही क्यों न हो, याद रखेगा (मत्ती 10:42)। तौभी यदि हम सुसमाचार की आज्ञा मानने से इनकार करें तो भले कामों से हमारा उद्धार नहीं हो जाता, न ही यदि हम सुसमाचार के अपने प्रारम्भिक आज्ञापालन के बाद मसीह से फिर जाएं तो वे हमारा उद्धार करेंगे।

धर्मी होने के कारण परमेश्वर दयालुता के हमारे कामों को **भूल** नहीं जाएगा। यह प्रतिज्ञा करूणा भरे उस के हृदय को दिखाती है और हमें धार्मिकता को मानने की प्रेरणा देती है। यह हमारी आत्मिक उन्नति के सम्बन्ध में सुस्त बने रहने के लिए बहाने के रूप में नहीं बल्कि प्रोत्साहन के लिए थी।

इब्रानी लोग चाहे परोपकार की सेवा करते रहने का प्रमाण देते थे, परन्तु उन्होंने वचन का अध्ययन करने की उपेक्षा की थी (5:12)। बहुत से लोग जो अपने आपको "मसीही" कहते हैं वे कल्पना करते हैं कि अन्य क्षेत्रों में आत्मिक कमी को भले काम पूरा कर देते हैं। कोई व्यक्ति हो सकता है कि व्यावहारिक मसीही हो पर व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन की कमी के कारण बढ़ न रहा हो। ये मसीही लोग चाहे अभी नये नये थे पर अभी गिरे नहीं थे। परमेश्वर को उनकी **पवित्र लोगों की सेवा** याद थी और उसे उस सेवा का भी पता था जो वे अभी भी कर रहे थे।

उन्होंने कैदियों के साथ भी दयालुता दिखाई थी (10:34), जिसमें उनकी अपनी जान जोखिम में पड़ गई थी। यदि वे ऐसी सेवा करना बन्द कर देते तो वे बेदीनी में फिसल सकते थे।

दूसरों के लिए दिखाया गया प्रेम **उस के नाम के लिए दिखाया** गया प्रेम है। ''नाम'' स्वयं मसीह को दिखाता है और यहूदियों द्वारा आमतौर पर परमेश्वर के लिए इस्तेमाल होता था जो परमेश्वर का नाम बोलते नहीं थे। ये मसीही लोग प्रभु की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए परोपकार के अपने काम कर रहे थे। वे व्यक्तिगत ढंग से ''सेवा कर भी रहे'' (*diakoneō)*) थे और दूसरों के दुख बांट रहे थे। पौलुस ने देह के अंगों को एक दूसरे के साथ दुख उठाने का आग्रह किया (1 कुरिन्थियों 12:26)।

विशेष ध्यान ''विश्वासी भाइयों'' की सहायता करने पर दिया जाना था (गलातियों 6:10)। निश्चय ही यरूशलेम में कलीसिया आरम्भ होने पर मसीही लोग यही करते थे (प्रेरितों 4:32–35) पहली सदी के मसीही निर्धनों की सहायता करना चाहते थे (प्रेरितों 15:4; गलातियों 2:10)। इस वचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि ऐसे ऐसे काम कलीसिया की पहचान बने रहे। यीशु ने कहा कि वह उन्हें आदर देगा जो बीमारों और कैदियों को देखने जाएंगे क्योंकि ऐसा वे उस के लिए ही कर हे थे (मत्ती 25:36, 40)।

यहां स्नेपूर्ण लगाव ''पवित्र लोगों'' अर्थात संतों यानी जीवित मसीही लोगों के प्रति दिखाया गया था। ''संत'' या ''पवित्र जन'' घोषित होने के लिए मृतक होने की आवश्यकता नहीं है यानी इस शब्द का अर्थ केवल ''जो अलग किया हुआ'' है। इस्राएल को पुराने नियम में परमेश्वर के लिए अलग किया गया था (देखें भजन संहिता 85:8; दानिय्येल 7:21–27) और अब इस शब्द का इस्तेमाल नये नियम के मसीही लोगों के लिए होता है।

आयत 11. ज़रूरतंदों के प्रति दिखाई गई इन पाठकों की चिंता उन के जीवनों के **अंत तक** रहनी थी। हम प्रभु से अवकाश लेकर नहीं जा सकते हैं। हमें प्रभु के साथ अपने चलन में लगे रहना आवश्यक है, इस के बावजूद हमें रास्ते में कष्ट और परीक्षा का सामना करना पड़ेगा (इब्रानियों 12:6, 7)।

यहां बताई गई **चाह** उस तड़प के जैसी ही है जो अपने चेलों के साथ फसह खाने की यीशु को थी (*epithumeō*; लूका 22:15)। उस घटना की बात करते हुए यीशु ने यह संकेत देते हुए कि यह कुछ ऐसा था जिसकी ''दिल से इच्छा की जानी'' थी, ज़ोर देने के लिए शब्द को दोहराया।

लगता है कि लेखक को भी इन पवित्र लोगों पर दया आई। ''ये प्रभाव मिलता है कि उन सब को नाम ले लेकर बुला सकता था।''[33] उस ने उन्हें अनिवार्य रूप में वही बात बताई जो उन कदमों के सम्बन्ध में जिन से कोई बढ़ सकता है पतरस ने कहा था (2 पतरस 1:5–11)। उस ने चेलों को ''भली भांति यत्न करते'' रहने की बात समझाई (आयत 10)। पतरस ने कहा कि मसीही अनुग्रहों को बढ़ाने के लिए काम करके हम परमेश्वर द्वारा ''बुलाए जाने'' अर्थात उद्धार को ''सिद्ध'' कर सकते हैं (देखें 2 पतरस 1:10)। स्पष्टतया ये मसीही लोग अपने आश्वासन में गिरावट को देख रहे हैं जबकि इसे बढ़ना चाहिए था।

पूरी आशा केवल भविष्य की शुभ इच्छा नहीं बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित विश्वास है (देखें 11:1)। नये नियम में ''आशा'' का अर्थ ''पक्की उम्मीद'' है। असली आशा

और असली विश्वास धीरज के साथ साथ चलते हैं। मसीह में हमारा यकीन विश्वास से बढ़ता है। परमेश्वर के प्रकाशन से हमारे अन्दर वह विश्वास पैदा हुआ है जो इस आशा का कारण है। अपने आपको प्रसन्न करने वाला जीवन बिताकर कोई वास्तविक आशा को नहीं पा सकता है; ऐसे जीवन में विश्वास के आधार के बिना आशा है। ''प्रेम'' (आयत 10), ''आशा'' (आयत 11) और ''विश्वास'' (आयत 12) तीनों वही बातें है जिन पर 1 कुरिन्थियों 13:13 में पौलुस ने ज़ोर दिया था।

वचन के ज्ञान में बढ़ना हमारे उद्धार के पूरे भरोसे के लिए हमारे मनों को खोलने की कुंजी है। ''पूरी आशा'' हमें केवल पवित्र जीवन में **प्रयत्न** के द्वारा ही मिल सकती है। ऐसा आश्वासन तभी मिलता और दिखाया जाता है जब कोई अपने प्रतिफल के रूप में स्वर्ग को पाने की तीव्र इच्छा और अपेक्षा करता है (इब्रानियों 11:6)। यह पक्की आशा समर्पित विश्वास का भाग है। इसमें हमें परमेश्वर की इच्छा को जानने और पूरा करने में सहायता के लिए पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते रहना शामिल है।

आयत 12. उद्धार की सिद्धता को पाने के लिए इब्रानी मसीही लोगों को **आलसी** (*nōthros*; देखें 5:11) न होने को कहा गया था। यह शब्द ''मंद'' वाला ही है। धीमे या ढीले होने के बजाय उन्हें विश्वासियों का **अनुकरण** करने वाले होना आवश्यक था जिन्हें विस्तार में अध्याय 11 में बताया गया है। यह भी पौलुस द्वारा कही गई बातों को ध्यान में लाता है (1 कुरिन्थियों 11:1; इफिसियों 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:14 भी देखें)। उस ने ''अनुकरण करो'' (*mimētēs*) के उसी रूप का इस्तेमाल किया जिस से हमें अंग्रेज़ी शब्द ''imitate [नकल करना],'' ''mimic [नकल उतारना] और ''mime'' [अनुकरण करना] ह्य मिलते हैं।

वफ़ादार मुर्दे पहले ही जीवन में प्रवेश कर चुके हैं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के वारिस हो चुके हैं। लाज़र (लूका 16:22, 25) और यीशु के मरने पर यही हुआ था, जिसे अपने मृत्यु के समय आत्मा में ''जिलाया गया'' था (1 पतरस 3:18)। यदि पाठक वफ़ादारों की नकल करते रहते जो उन से पहले गए थे तो उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के रूप में वही प्रतिफल मिलना था। उन्हें यह प्रतिफल विश्वास और धीरज से सहने के द्वारा मिलना था, और हमारे लिए भी यही बात है। हमें समय की लम्बाई या बोझों के भार से परेशान न हों क्योंकि महिमा में हमारे प्रतिफल के ''भार'' की तुलना में वे ''हल्के'' हैं (2 कुरिन्थियों 4:17, 18)।

वफ़ादार लोग विश्वास में मरने पर वर्तमान में **प्रतिज्ञाओं के वारिस** हो रहे थे (*klēronomountōn,* वर्तमान कृदंत)। एक और अर्थ में उन्हें ''प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली'' थी क्योंकि उन्हें अभी सम्पूर्ण प्रतिफल नहीं मिला था (इब्रानियों 11:39)। यह प्रतिफल केवल उन के लिए है जो अन्त तक विश्वासी रहते हैं। विश्वासी ''कभी नष्ट न होंगे'' क्योंकि उन्होंने लगातार सुना और विश्वास किया है (यूहन्ना 10:27, 28)। जो लोग अनन्तकाल तक उद्धार पाना चाहते हैं उन्हें उद्धारकर्त्ता की आवाज को सुनकर मानते रहना आवश्यक है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की मीरास **धीरज** (*makrothumia*) के द्वारा मिलती है जिस का अर्थ है ''धैर्य'' या लोगों के प्रति ''सहनशीलता से धीरज।'' ''धीरज'' के लिए सामान्य शबद *hupomonē* का अर्थ आनन्द से परीक्षाओं और कठिनाइयों को सहना। विश्वास में दृढ़ता के

बिना व्यक्ति मीरास को प्राप्त नहीं करेगा।

वारिस को आशा होती है, और जब मीरास मिल जाती है तो उसकी आशा पूर्ण हो जाती है। यह हमें 1:14 का स्मरण दिलाता है जो ''उद्धार पाने वालों'' की बात करता है।[34] ''मसीह यहां अपने लोगों को 'उन के पापों से' (मत्ती 1:21) बचाने के लिए आया न कि उन में। इस विचार को मानने से कि मैं यहां नरक के बालक के रूप में रहकर स्वर्ग में जाऊंगा बदतर, और कोई मान्यता नहीं है।''[35]

6:13-20

[13]परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा करते समय जब कि शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा। [14]मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा। [15]और इस रीति से उस ने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। [16]मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उन के हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। [17]इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रकट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया। [18]ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिन के विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को सामने रखी हुई है प्राप्त करें। [19]वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर पहुंचता है। [20]जहां यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अगुआ की रीति पर प्रवेश किया है।

इब्रानियों को आलसी न होने की ताड़ना न देने के बाद लेखक ने अब उन्हें उन के इतिहास में विश्वास और धीरज के सबसे बड़े उदाहरण को याद दिलाया। उस ने दूसरी बार आब्रहम का नाम लिया (देखें 2:16)। इस के बाद उस का नाम बार बार मिलता है। शायद लेखक इस्राएल के पितामह के साथ परमेश्वर के सबसे पहले व्यवहारों की बात करते हुए इन इब्रानी मसीही लोगों को व्यवस्था से दूर जाने की सलाह भी दे रहा था। अब्राहम को दी गई ''वंश'' की प्रतिज्ञा के 430 साल बाद व्यवस्था को दिए जाने को दिखाकर उस ने यही किया था। यह अनोखी प्रतिज्ञा मसीह के आने से पूरी हुई थी (गलातियों 3:16-19)।

आयत 13. अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा का वर्णन उत्पत्ति 12:1-7; 15:5; 17:5-8; और 22:15-18 में है। ध्यान में अब्राहम को लाने का एक कारण यह है कि उसके साथ की गई प्रतिज्ञा पहले से पूरी हो गई थी। ब्रूस ने अनुमान लगाया है कि ''मरे हुओं में से ... दृष्टांत की रीति पर'' इसहाक को वापस पाकर या (''नमूने में''; इब्रानियों 11:19; ASV) उस ने ''बहुत ही ठोस अर्थ में 'प्रतिज्ञा को पाया।' ''[36] उस समय उस के ''वंश'' की प्रतिज्ञा को पक्का किया गया था प्रतिज्ञा का भाग जो मसीह में उद्धार की बात है (गलातियों 3:26-29) उसकी मृत्यु के बाद तक नहीं मिला था। यहूदी और अन्यजाति पृष्ठभूमि वाले लोगों से कई अन्य लोगों के साथ अब्राहम को अन्त में स्वर्ग में पूर्ण उद्धार प्राप्त होगा (देखें मत्ती 8:11)।

नया नियम जब भी विश्वास की बात करता है, वहां अब्राहम का नाम आता है। जो पाठक परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अपने समर्पण में अपने आपको अब्राहम के साथ मिला सकता है वह मानने के लिए दृष्टांत के रूप में अब्राहम के मलकिसिदक के अधीन होने के साथ मिला सकता है। यह दृष्टांत 7:1–10 में ठहराया गया है विश्वासियों के नये "मलिकिसिदक" मसीह के अधीन होने को दिखाता है।

अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा और परमेश्वर की शपथ उत्पत्ति 22:15–18 में मिलती है; किसी अन्य अवसर पर परमेश्वर ने शपथ के साथ अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा की पुष्टि नहीं की। वह प्रतिज्ञा क्या थी? उसे व्यक्तिगत रूप से आशीष मिलनी थी। उसकी असंख्य संतानें होनी थीं, उस के वंश के द्वारा मसीहा ने आना था (गलातियों 3:16) और उसमें उस "वंश" के सभी विश्वासियों का पिता होना था। इस कारण मसीह का भाग होने के कारण हर मसीही विश्वास में "अब्राहम का वंश" उसकी "संतान" है (गलातियों 3:26–29)।

शपथ की आवश्यकता नहीं लगती परन्तु फिलो सही हो सकता है जब उस ने कहा कि यह पूरी तरह से मानवीय आवश्यकता के अनुरूप थी।[37] शायद अब्राहम को परमेश्वर की दी हुई शपथ का आश्वासन चाहिए था। अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा में से अधिकतर बहुत देर बाद पूरी होने वाली थी। इस के पूरा होने में देरी के कारण अब्राहम को अपने विश्वास को बनाए रखने में सहायता के लिए शपथ की आवश्यकता हो सकती है।

आयतें 14, 15. परमेश्वर ने कहा, **"मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा"** (आयत 14)। पुराने नियम की प्रतिज्ञा में इब्रानी के हूब हू होने की झलक KJV में मिलती है "आशीष में मैं तुझे आशीष दूंगा" (उत्पत्ति 22:17)। "आशीष" का दोहरा उपयोग ज़ोर देने और अतिरिक्त निश्चित्ता के लिए था। प्रतिज्ञा तो पहले ही पक्की थी परन्तु परमेश्वर के शपथ को जोड़ने से यह और भी पक्की लगने लगी। जब मनुष्य शपथ खाते हैं तो वे किसी बड़ी शक्ति की ओर ध्यान कर रहे होते हैं। जो उन के अपनी बात पर खरा न उतरने पर उन्हें दण्ड दे सकती है। परमेश्वर ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि कोई बड़ा है ही नहीं जिस से अपील की जा सके। इस कारण शपथ लेते हुए परमेश्वर ने अपने ही अस्तित्व से शपथ खाई कि वह प्रतिज्ञा पूरी होगी। जब मनुष्य परमेश्वर की शपथ खाते हैं तो उन्हें यह मानना आवश्यक है कि परमेश्वर है और वह प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6) और उसकी आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देता है; नहीं तो ऐसी शपथ का कोई अर्थ नहीं होता।

इब्रानियों की पुस्तक "प्रतिज्ञा" की पुस्तक है। यह शब्द संज्ञा और क्रिया रूपों में अठारह बार मिलता है, जो कि नये नियम की किसी भी पुस्तक में सबसे अधिक है।[38] धीरज से सहने के बाद अब्राहम ने परमेश्वर की **प्रतिज्ञा** की हुई बात **प्राप्त की**। उत्पत्ति 12:1–3 वाली प्रतिज्ञा तब की गई थी जब अब्राहम पचहत्तर वर्ष का था। यह उस के गर्भधारण में इस के पूरा होने के आरम्भ और बाद में इसहाक के जनम को देखने से भी चौबीस वर्ष पहले हुई थी। इसहाक को बलिदान करने की उसकी कोशिश के बाद परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपने वायदे को फिर से देहराया और अपनी ही कसम खाते हुए अपनी शपथ दी (उत्पत्ति 22:16)। अब्राहम अपने पोतों याकूब और एसाव के जन्म को देखने तक जीवित रहा होगा। परन्तु विश्वास से उस ने मसीह के दिन को देखा और आनन्दित हुआ (यूहन्ना 8:54–56)। उस के बड़े विश्वास को **धीरज धरकर**

बताया गया है। वह हर परीक्षा के साथ विश्वास में मज़बूत हुआ (रोमियों 4:20); परन्तु प्रतिज्ञा की हुई कई आशिषों के लिए उसे मरने के बाद तक प्रतीक्षा करनी पड़नी थी। यदि उसी समय पूरी हो जाती तो शपथ की कोई आवश्यकता ही नहीं होनी थी।

परमेश्वर की शपथ ने अब्राहम को आश्वस्त किया कि वह अपनी संतान को देखने के लिए बहुत दिन तक जीवित रहेगा कि परमेश्वर उसे शत्रुओं का सामना करने पर भी हानि से उसकी रक्षा करेगा और वह न केवल शारीरिक रूप में बल्कि विश्वास में भी आत्मिक संतान का, बहुतों का पिता होगा (गलातियों 3:7, 26–29)।

आयत 16. अनुवादित शब्द **पक्का** के लिए यूनानी शब्द *bebaiōsis* सात सौ से अधिक वर्ष तक अधिकारिक शब्द रहा जब लोग कानूनी तौर पर किसी बिक्री की गारंटी देते थे।[39] यदि हम कुछ खरीदना चाहते हैं तो हमें अपने अच्छे विश्वास के लिए कि हम भविष्य में किसी समय बकाया राशी दे देंगे टोकन के रूप में अडवांस देना आवश्यक होगा। वह राशि **शपथ** का काम करती है कि हम खरीदारी को पूरा करेंगे नहीं तो अडवांस ज़ब्त हो जाएगा। बकाया राशी न दे पाने पर अपनी बात पर खरा न उतरने वाले को पूरी राशि का दण्ड देना पड़ेगा।

सब देशों के लोग भाग लेने वाले हर पक्ष के लिए गम्भीर और मानने योग्य शपथों को मानते हैं। जब लोगों ने अपनी शपथ को गम्भीरता से नहीं लिया तो उन का गम्भीर न होना नैतिकता में गिरावट का संकेत बन गया। परमेश्वर प्रतिज्ञा की हुई मीरास के मामले को सदा के लिए सुलझाना चाहता था। उसकी प्रतिज्ञा और शपथ के द्वारा हर प्रकार का संदेह दूर हो सकता था।

मसीह के पृथ्वी पर रहने के समय तक यहूदियों ने विशेषकर शास्त्रियों और फरीसियों ने एक सिस्टम बना लिया था जिसमें "छोटी शपथों को मान्य नहीं माना जाता था।" उन्होंने अपने सिस्टम को अपने बीच में ही गुप्त रखा होता था, परन्तु यीशु को मालूम था और उस ने उन्हें ऐसी रीतियों के कारण कपटियों के रूप में उजागर किया (मत्ती 23:16–22)। वे "मेरी दाढ़ी की" या "परमेश्वर के मन्दिर की" शपथ को अपने ऊपर नहीं मानते थे। यदि उस शपथ में झूठ बोलने का आरोप हो तो व्यवस्था के अनुसार उस झूठे को दोषी ठहराने के लिए दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती थी (इब्रानियों 10:27, 28; देखें व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; मत्ती 18:16; यूहन्ना 8:17, 18; 2 कुरिन्थियों 13:1)। इस सिस्टम के विपरीत यीशु ने अपने चेलों को सच बोलना सिखाया, इस प्रकार उस ने शपथ खाने को अनावश्यक बना दिया (मत्ती 5:33–37; याकूब 5:12)। शपथों के सम्बन्ध में उसकी शिक्षा कानून की किसी अदालत में सच्च बोलने के लिए शपथ खाने से मना नहीं करती। उसने जब तक उसे शपथ न दी गई तब तक अपने ईश्वरीय पुत्र होने का उत्तर नहीं दिया (मत्ती 26:63, 64)।

आयत 17. इब्रानी लोग प्रतिज्ञा के वारिस थे, परन्तु उन्हें यह जानने के लिए कि **परमेश्वर** की प्रतिज्ञाएं उन्हें मसीह में मिलनी थी, विशेषकर बार बार आश्वासन दिया जाना चाहिए था। सब मसीही लोग मसीह के साथ "संगी वारिस" (या "संयुक्त वारिस"; KJV) हैं। जिसका अर्थ यह है कि हम उस के साथ बराबर के वारिस हैं (रोमियों 8:17)। अब्राहम की विरासत केवल यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि मसीह में अन्यजाति विश्वासियों के लिए भी है। अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना कभी बदलती नहीं है। इसलिए हमारे लिए उसकी प्रतिज्ञाएं **बदल नहीं** सकतीं या वे "अपरिवर्तनीय" हैं (KJV)।

परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाएं सशर्त हैं यानी यदि हम शर्तों को पूरा न कर पाएं तो हो सकता है कि वे हमें न मिलें। तो फिर वाचा की गारंटी कैसे दी जा सकती है? गारंटी देने वाले के रूप में परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। जब कोई मानवीय शर्त न हो तो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने पर हम भरोसा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हमारे काम चाहे जैसे भी क्यों न हों, संसार का अन्त आने वाला है।

आयत 18. अपनी इच्छा के बिल्कुल अनुरूप परमेश्वर ने अब्राहम को आश्वस्त करने के लिए कि वह अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वायोग्य होगा, दो गवाहियां दीं। परमेश्वर की अपरिवर्तीय प्रतिज्ञा में उसकी अपरिवर्तीय शपथ को जोड़ दिया गया। इस प्रकार **दो बे बदल बातें** उसकी प्रतिज्ञा और उसकी शपथ हैं।

परमेश्वर का झूठा ठहरना या अपने स्वभाव से मेल न खाता कोई काम करना **अनहोना है;** परन्तु उस के स्वभाव से जो भी बात मेल खाती है उसे यदि आवश्यकता हो तो वह कर सकता है और करेगा। वह संसार की सृष्टि कर सकता है या मुर्दों को जिला सकता है, परन्तु वह झूठ नहीं बोल सकता या अपना इनकार नहीं कर सकता (2 तीमुथियुस 2:13)। यदि वह अपनी शपथ तोड़ता है तो उस के अस्तित्व का नियम ही टूट जाएगा। फिर वह, वह परमेश्वर नहीं रहेगा जिसे हम जानते और प्यार करते हैं।

प्राचीन संसार में हर जगह यह विश्वास था कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। आर. सी. एच. लैंसकी ने लिखा है, "[कोई भी] जो मसीह से मुड़कर यहूदीवाद में वापस चला जाता है इस प्रकार परमेश्वर पर दोहरे झूठ का आरोप लगाएगा: कि उसकी प्रतिज्ञा का अर्थ वह नहीं है जो इसमें कहा गया है और उसकी शपथ झूठी है।"[140]

हम परमेश्वर की **शरण लेने को** वैसे ही आए हैं जैसे कोई प्राचीनकाल का हत्यारा शरण नगर में भागता[41] (गिनती 35; यहोशू 20) या जैसे कोई नाविक तुफ़ान के प्रकोप से किसी सुरक्षित बन्दरगाह में बचता। प्राचीनकाल के लोग विभिन्न आतंकों से भागते समय आम तौर पर अपने मन्दिरों में शरण लेते थे। नई वाचा के अधीन मसीही लोगों को परमेश्वर के नये मन्दिर के पर्दे के पीछे सुरक्षा मिलती है। हमें मसीह के साथ जो इसमें पहले ही प्रवेश कर चुका है, पूर्ण सुरक्षा मिली है। जब हम "पर्दे के भीतर" जाते हैं (आयत 19), तो हम यीशु की बाहों में सुरक्षित होते हैं।

यह सुरक्षा हर प्रकार की दासता से स्वतन्त्रता भी है। हम में से हर कोई जीवन में एक ऐसे समय में आएगा जब हमें शरण और सामर्थ के रूप में परमेश्वर की आवश्यकता होगी। बहुतों को भजन संहिता 46:1, 2 में प्रोत्साहन मिला है:

> परमेश्वर हमारा शरण स्थान और बल है,
> संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
> इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए,
> और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं।

हम इस वर्तमान संसार से जो जल्द ही अलोप हो सकता है भाग रहे शरणार्थियों की तरह हैं। हमारा मन्दिर स्वर्ग में है न कि सांसारिक मन्दिर। हमारी आशा हमें आगे बढ़ते रहने को प्रेरित

करती है; हमें "उस आशा के जो सामने रखी हुई है," "आने वाले नगर," के विश्वास के द्वारा प्रमाण मिला है (13:14)।

परमेश्वर हमें **दृढ़ता से ढाढ़स** देना चाहता था। "ढाढ़स" के लिए शब्द *paraklēsis* है जिस का अर्थ "सांत्वना," "तसल्ली," या "उपदेश/ताड़ना" भी हो सकता है। इन सभी विचारों में परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं शामिल हैं। हमें उन प्रतिज्ञाओं से अपनी सबसे मज़बूत हिम्मत मिलती है; हम उन में स्थिरता से सुरक्षित रह सकते हैं। परमेश्वर परीक्षा से बचने का रास्ता हमेशा देता यदि हम उस बचाव को तलाशें, उसकी राह देखें और उस का लाभ उठाने को तैयार हों (1 कुरिन्थियों 10:13)।

आयत 19. यूहन्ना 14:1, 2 जैसी प्रतिज्ञाओं पर बनी **आशा हमारे प्राण के लिए लंगर है।** जहाज़ को जब सही ढंग से लंगर डाला गया हो तो वह इधर उधर भटक नहीं सकता, न ही हम भटक सकते हैं। यदि लंगर मज़बूत है तो यह न टूटेगा न मुड़ेगा; और यदि इसे सुरक्षित ढंग से बांधा गया है तो जीवन का हमारा जहाज़ सुरक्षित है। यदि हम अपनी महिमामय आशा को खो देते हैं तो सब कुछ खो जाता है। लंगर की उपमा प्राचीनकाल के संसार में आम थी। सुकरात ने कहा था, "जहाज़ एक लंगर पर निर्भर नहीं रह सकता, न जीवन एक आशा पर।"[42] नाविक समुद्र में लंगर को फैंकता है, परन्तु मसीही व्यक्ति का लंगर स्वर्ग में है जहां यीशु **पर्दे के भीतर** चला गया है (6:19; देखें 9:24)। हमारा लंगर मसीह है–"मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" (कुलुस्सियों 1:27; देखें 1 तीमुथियुस 1:1)।

किसी को लेखक के यह कहने की उम्मीद हो सकती है, "हमारा लंगर सुरक्षित बन्दरगाह के मज़बूत तले में डाला गया है।" इस के बजाय "बिल्कुल अलंकारिक यत्र" के द्वारा[43] वह मसीह के महायाजक होने के विषय पर लौट आया।

आयत 20. पुराने नियम का कोई याजक आराधकों को पर्दे के पीछे नहीं ले जा सकता था। जैसे **यीशु** ले जा सकता है, और न पुराने नियम का कोई याजक हमारा **अगुआ** हो सकता था। यह शब्द *prodromos* स्काउट के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो सेना के आगे आगे चलता है। हमें "एक आशा है जो पर्दे के पीछे के भीतरी मन्दिर में जाती है" (NRSV), जो इस बात का संकेत है कि मन्दिर का परम पवित्र स्थान स्वर्ग की महिमा का प्रतीक था (देखें 9:11, 12)। यही वह स्थान है जहां यीशु हमारे लिए अपना लहू लेकर गया है।

एक दिन यीशु हमें अपने साथ स्वर्ग में ले जाएगा। सांसारिक याजक केवल उसमें जा सकते थे जो स्वर्गीय की परछाई था। "पर्दा" भौतिक और अभौतिक संसारों के बीच के बिन्दु का सुझाव देता हो सकता है। उस उत्तम क्षेत्र में जाकर मसीह ने हमारे लिए पीछे चलने का "एक नया और जीवित मार्ग" खोल दिया है (10:20–22)। ऐसी प्रतिज्ञाएं "स्थिर और दृढ़" हैं (आयत 19) क्योंकि परमेश्वर के वचन हमेशा सच्चे साबित हुए हैं। यदि वह एक बात में भी नाकाम हो जाता तो हम उसे झूठा मानते और उसकी किसी भी प्रतिज्ञा पर भरोसा न करते।

जिस प्रकार से यीशु का अग्रदूत यूहन्ना डुबकी देने वाले में था, वैसे ही हमारा अग्रदूत यीशु में है जिस ने हमारे लिए मार्ग तैयार किया है और जगह तैयार कर रहा है (यूहन्ना 14:1–3, 6)। "अगुआ" बसंत की पहली कोंपलों और कोहलू में पीढ़े जाने वाले आरम्भिक दाखों के पहले रिसाव को कहा जा सकता है।[44] ब्रूस ने कहा है कि इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर यूनानी

भाषा में छावनी ढूंढ़ने के लिए और सेना द्वारा किसी आश्चर्य को रोकने के लिए सेना से पहले भेजी गई टुकड़ी के गुप्तचरों के लिए किया जाता था।[45] हारून परम पवित्र स्थान में जाता रहता था परन्तु कभी "अगुआ" के रूप में नहीं। यीशु हमारा स्काउट है क्योंकि वह हमारे लिए रास्ता और साफ़ करने के लिए हम से पहले गया है।

यीशु हमारा "अग्रणी" है और स्वर्ग में गया है ताकि हमें चलने के लिए पक्का आश्वासन मिल स के, चाहे कई बार उस अनन्त मंजिल तक जाने के लिए पथरीले रास्ते भी आते हैं। जब यीशु मरा तो मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया, जो कि केवल परमेश्वर ही कर सकता था (मत्ती 27:51); महिमा में जाने का मार्ग अब देखन के लिए खुला है।

आयत 20. **मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का याजक बनकर** के साथ समाप्त हो जाती है। (देखें 5:6, 10; 6:20; 7:1–15 पर चर्चा देखें।)

और अध्ययन के लिए:
बपतिस्मा (6:2)

नये नियम की कलीसिया के लोग अपनी बुनियादी शिक्षा के हाल के रूप में यीशु द्वारा बपतिस्मे की आज्ञा के उद्देश्य को समझते थे। उन्हें राज्य अर्थात मसीह की देह में आने के लिए भी इस का पता होना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 12:13)। वे जानते थे कि यह ऐसा कार्य है जिसे दोबारा दोहराया नहीं जाएगा। उन्हें इसे भूले बिना उस सच्चाई से आगे बढ़ना चाहिए था। बपतिस्मा इतना महत्वपूर्ण है कि इसे भुलाया नहीं जा सकता! प्रेरितों के काम में इसे आज्ञाओं में (प्रेरितों 10:48), "मसीह का प्रचार" सुनने की आज्ञा मानने के रूप में समझाया गया है (8:29–39), और पत्रियों में प्रभु की देह के सभी अंगों द्वारा किए जाने के रूप में बताया गया है।[46] इसे मसीह और उस के क्रूस पर चढ़ाए जाने के प्रचार के रूप में सिखाया गया (प्रेरितों 8:35–39; 1 कुरिन्थियों 2:2; देखें प्रेरितों 18:8)।

मसीही लोग इस के महत्व को समझते थे और पौलुस को केवल उन्हें पाप में वापस न जाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए केवल यह याद दिलाना आवश्यक था कि उन के मसीह की "मृत्यु में बपतिस्मा" लेने के समय क्या हुआ था (रोमियों 6:3, 4)। वह मृत्यु उन के मसीह में बपतिस्मा लेने पर उन के पापों की मृत्यु थी। यह नूह के उद्धार में दिखाए गए नमूने का पूरा होना था (1 पतरस 3:20, 21)। निश्चय ही उन्हें पता था कि यह "भीतरी अनुभव की बाहरी अभिव्यक्ति" से बढ़कर था जैसा कि कुछ लोगों ने बपतिस्मे को कहा है। यह वह माध्यम था जिस के द्वारा वे विश्वास से मसीह में आते थे और उन्होंने मसीह को पहना था (गलातियों 3:26, 27)। नये नियम में बपतिस्मे पर उतनी लम्बी चर्चा नहीं है जितनी इसकी आज्ञा है। इसे यूहन्ना डुबकी देने वाले (मत्ती 3:1–5) यीशु मसीह (यूहन्ना 4:1–3) के अधीन और प्रेरितों के काम वाले विस्तार से बताए गए मन परिवर्तनों वाले माना गया। यह इतनी सीधी आज्ञा थी कि इसे मानने वाले सब लोगों को समझ थी कि उन्हें "मसीह में बपतिस्मा" दिया गया था (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27) और इस के कार्य करने के रूप में किसी चर्चा की आवश्यकता नहीं थी।

प्रासंगिकता

सिद्धता की ओर (6:1)

पौलुस ने तीमुथियुस को आत्मा में बढ़ने की कुंजी दे दी: ''पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था?'' (2 तीमुथियुस 3:14)। हमें फिर से गिरने से बचाने के लिए विश्वास का बढ़ता रहना आवश्यक है। विश्वासत्याग से दूर रहने के लिए हमें उस खतरे के भय से प्रेरित होना चाहिए। दुष्टों के धोखे के विपरीत पौलुस ने तीमुथियुस को ऐसी चीज़ों से कभी दूर न होने को कहा जो उस ने पहले से सीखी हैं और उन के बारे में वह पक्की तरह से जानता है कि वे हैं। पौलुस के मन में कौन सी बातें थीं? उस ने आगे बताया:

> और बालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो मुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:15-17)।

परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया पवित्र शास्त्र या धर्म शास्त्र पुराने और नये दोनों नियमों को कहा गया है। तीमुथियुस को बढ़ने के लिए इन दोनों का अध्ययन करते रहना आवश्यक था। निश्चित रूप में बचपन में उसे नये नियम के सिद्धांत नहीं बताए गए थे, कम से कम पौलुस द्वारा उसे सुसमाचार देने के लिए पहुचने से पहले तो नहीं; परन्तु पौलुस का ''पवित्र शास्त्र'' कहना नये नियम को भी शामिल करता है। पुराने नियम से उद्धृत करने के अलावा उस ने 1 तीमुथियुस 5:18 में ''पवित्र शास्त्र'' कहते हुए लूका 10:7 या मत्ती 10:10 के शब्दों को दोहराया। इस कारण 2 तीमुथियुस 3:16 ''पवित्र शास्त्र'' का अर्थ पुराना और नया दोनों नियम हैं।
आत्मिक उन्नति धीरे धीरे होने वाली प्रक्रिया है। यदि हम दिब-ब-दिन बढ़ने के दर्जे को समझ नहीं सकते तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। बल्कि सिद्धता की ओर बढ़ते हुए पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते रहना चाहिए।

हमारी ''शिक्षा की आरम्भ की बातें'' (6:1, 2)

सबसे बुनियादी सच्चाई यह है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 3:17; 16:13-17; देखें 1 कुरिन्थियों 3:11)। विश्वास की इस साधारण स्वीकृति पर वह हर बात टिकी है जिस पर हम विश्वास करते हैं। यदि कोई इसे मान लेता है तो वह नये नियम की शिक्षा की हर बात के, मसीह और उस के प्रेरितों की ओर से होने को मानने को तैयार है। मसीह ने उन्हें हमें सच्चाई देने की सामर्थ (यूहन्ना 16:12, 13) और जैसा उस ने कहा था कि वह आत्मा के प्रकाशन की रक्षा करेगा उस ने उपाय के द्वारा इसे किया (मत्ती 24:35)। हम यीशु में परमेश्वर की प्रेरणा पाए भविष्यवक्ताओं, प्रितों और अन्य लोगों के द्वारा हमें दिए गए प्रकाशन के कारण यीशु में विश्वास करते हैं। जो कुछ उन्होंने लिखा उसकी हर बात को माने बिना हम यीशु में विश्वास

नहीं कर सकते। यीशु ने कहा कि उसकी ''बातें'' समझदार लोग मानेंगे (मत्ती 7:24, 25)। इस का अर्थ यह है कि निश्चय ही उसे मालूम था कि उसकी बातें हर जगह लोगों तक कैसे पहुंचाई जाएंगी। इस प्रकार अपने सभी अर्थों के साथ ''अच्छा अंगीकार'' (1 तीमुथियुस 6:12) स्पष्ट रूप में हमारे विश्वास की नींव है।

हाथ रखना (6:2)

प्रेरितों के काम में हाथ रखने को ''आत्मिक दान'' आगे देने के साथ जोड़ा गया है जिस का अर्थ निश्चित रूप में अलौकिक शक्ति देना है। सात लोगों पर प्रेरितों के हाथ रखने के तुरन्त बाद (प्रेरितों 6) स्तिफनुस और फिलिप्पुस दोनों आश्चर्यकर्म कर सकते थे (प्रेरितों 6:6, 8; 8:4–8, 12, 13)। आधुनिक समयों में ''आत्मिक दानों'' के विचार को विशेष आश्चर्यकर्मों की सामर्थ से बढ़ाकर पैसा कमाने और इसे निर्धनों की सहायता के लिए देने सहित किसी भी प्रकार के गुण का अर्थ देने के लिए कम कर दिया गया है (जैसा 1 कुरिन्थियों 12:4–11 में बताया गया है)। यह रोमियों 12:6–8 को गलत समझने के आधार पर है। उस भाग में दानों का पहला विभाजन 1 कुरिन्थियों 12:4–11 वाले दानों से बिल्कुल मेल खाता है जिसमें भविष्यद्वाणी, सेवा, सिखाने और उपदेश देने की बातें बताई गई हैं। यह 1 कुरिन्थियों 12 और इफिसियों 4:11 में बताए गए दानों से मेल खाता है। प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं (जो परमेश्वर की इच्छा से बोलते थे), सुसमाचार प्रचारकों, रखवालों (चरवाहों/प्राचीनों) और उपदेशकों को आत्मा द्वारा दिए उन के कामों को पूरा करने के लिए उन्हें योग्य बनाने के लिए विशेष दान मिले थे।

रोमियों 12 वाली सूची में ''भविष्यद्वाणी'' के बाद ''सेवा'' (*diakonia*) आती है। इस शब्द का एक रूप प्रेरितों 6:2 में सात लोगों के काम के लिए लागू किया गया था। सातों को प्रेरितों द्वारा उन पर हाथ रखे जाने के बाद ऐसी शक्तियां मिली थीं। रोमियों 12 के सम्बन्ध में मोज़ज लार्ड का अवलोकन है कि यूनानी भाषा में ''जो देता है वह उदारता से दे'' शब्दों के साथ संरचना में बदलाव है (12:8):

> *Eite* [''जबकि''] मैं इसे लेता हूं है, अनजाने में नहीं बल्कि जानबूझकर इस वाक्यांश से पहले रखा गया है। यह पहले खड़ा है और चार पिछले वाक्यांशों के साथ इकट्ठा जुड़ा है। और उन में से हर एक किसी विशेष दान के होने का संकेत देता था। परन्तु इन चारों वाक्याशों के बाद विशेष दान बढ़ते नहीं। पांचवें वाक्यांश के साथ [लेखक] अन्य कर्त्तव्यों का नाम बताने लगता है जिन के लिए किसी विशेष दान की आवश्यकता नहीं थी; और इसलिए वह *eite* को छोड़ देता है।[47]

यह पवित्र शास्त्र के केवल व्याख्या किए हुए संस्करणों को पढ़ने के खतरे का सुझाव देता है, जो उन शब्दों को मिटा सकते हैं जिन का बड़ा महत्व हो सकता है। रोमियों 12:6 में ''जब कि'' (*eite*) शब्द के आवश्यक होने को शामिल करने का कारण जानने के लिए पुराना ASV पढ़ना पड़ेगा। रोमियों की इस आयत के दूसरे भाग में अधिक स्वाभाविक योग्यताओं की बात है जिन्हें हम *गुण* कहेंगे जो मसीही लोगों को दूसरों के लिए सेवाएं करने के योग्य बनाते हैं, बिना किसी आश्यर्चकर्म के। धन की आशीष पाए हुए लोग उन्हें दिए गए परमेश्वर के ''दान'' के

कारण अधिक दे सकते हैं, परन्तु बाइबल के अर्थ में यह ''आत्मिक दान'' (*pneumatikos charisma*, मूलतया ''दान आत्मिक'') नहीं है।

इस के अलावा पौलुस चाहे रोम में नहीं गया था परन्तु उसकी इच्छा वहां जाने की थी ताकि वह वहां पर भाइयों को आत्मिक दान दे स के (रोमियों 1:11)। यदि यह केवल कोई ऐसी बात होती जिसे वह उन्हें सिखाने के द्वारा देना चाहता था तो वह रोम में अपनी पत्री भेजकर ऐसा कर सकता था। बहुत से लोग ''आत्मिक दानों'' के सही बाइबली अर्थ को समझ नहीं पाते हैं जिस कारण वे ''आत्मिक दान'' होने का दावा करते हैं। वास्तव में उन्होंने इन गुणों को बढ़ाया है। दूसरे बहुत से लोग भी यदि उन्हें वही प्रशिक्षण मिलता तो उन्हीं गुणों का इस्तेमाल कर सकते थे।

अन्तिम न्याय (6:2)

आधुनिक प्रचार में आम तौर पर अन्तिम न्याय के विचार को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है। मत्ती 25:31-46 में दिखाए गए न्याय के दिन ''सब जातियां (जिस का अर्थ है सब लोग)'' मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने खड़ी होंगी। यूहन्ना 5:28, 29 ''जीवन के पुनरुत्थान'' और ''दण्ड के पुनरुत्थान'' की बात करता है। न्याय से तय होगा कि हमें कौन सा पुनरुत्थान मिलेगा।

हमें आने वाले न्याय का प्रचार करना आवश्यक है। पौलुस ने रोमी हाकिम फैलिक के सामने इतना प्रभावशाली ढंग से इस का प्रचार किया कि वह डर गया (प्रेरितों 24:25)। इब्रानियों 12:29 हमें बताता है कि ''हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।'' 10:30ख, 31 में हम पढ़ते हैं, ''... प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।'' पवित्र शास्त्र आने वाले न्याय की चेतावनियों से भरा पड़ा है: पढ़ें मत्ती 12:41, 42; यूहन्ना 12:48; प्रेरितों 17:30, 31; रोमियों 2:4, 5; 14:10-12; 2 कुरिन्थियों 5:10; इब्रानियों 9:27; और प्रकाशितवाक्य 20:11-15.

''यदि परमेश्वर चाहे तो'' (6:3)

कुछ लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के वचन के बिना आत्मिक सिद्धता की ओर ले जाएगा। यदि ऐसा होता तो अध्ययन करने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी। किसी में केवल किसी प्रश्न पर अपने आपको सही साबित करने के लिए पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने वाली गलत सोच हो सकती है परन्तु जो उत्सुक मन से वचन में बदलता रहता है वह दिन प्रतिदिन वैसा बनता जाएगा जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता है (2 कुरिन्थियों 3:18; देखें याकूब 1:23-25)। हमें वचन पर मनन करते रहना आवश्यक है ताकि यह हम पर अपना मन चाहा प्रभाव डाल स के।

आत्मिक उन्नति कोई आश्चर्यकर्म नहीं है बल्कि एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। कुछ लोग नये जन्म सहित हर बात को आश्चर्यकर्म बताने की कोशिश करते हैं। यीशु ने कहा कि यह कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर ''अचम्भा'' किया जाए (यूहन्ना 3:7)। आश्चर्यकर्म चकित करने या आश्चर्य में डालने के लिए बनाए गए थे। यदि नया जन्म आश्चर्यकर्म होता तो यह एक दिन एक प्रकार से और अगले दिन किसी और प्रकार से हो सकता है। इस के विपरीत यह हर

बार सुसमाचार के द्वारा ही होता है (1 कुरिन्थियों 4:15; याकूब 1:18; 1 पतरस 1:22, 23)। यदि आधुनिक विज्ञान का कोई हस्तक्षेप न हो तो शारीरिक जन्म भी एक ही प्रकार से होता है। गर्भधारण और जन्म की प्रक्रिया हमें अचम्भित कर सकती है परन्तु पता ही होता है कि क्या होगा और यह आश्चर्यकर्म नहीं है। यह ईश्वरीय मूल से है और ईश्वरीय नियम के अनुसार होता है। नया जन्म भी ऐसा ही है (यूहन्ना 3:7, 8)। यह आत्मा के बेहतर अनुवाद "वायु" के परमेश्वर के वचन के द्वारा सामर्थ लेकर हृदय और जीवन को बदलने पर होता है जिस से मसीह में एक नया व्यक्ति बन जाता है।

"यदि परमेश्वर चाहे तो" का अर्थ है कि नये नियम के लेखकों को भविष्य का कभी पता नहीं होता था, न ही उन्हें यह पता होता था कि किसी विशेष घटना में परमेश्वर कब काम कर रहा है। यह दावा करना कि "मैं जानता हूं कि प्रभु इसी समय इस कलीसिया को आशीष दे रहा है" यह शेखी मारना है जो सही हो भी सकता है और नहीं भी। हमें लगता है कि कलीसिया का बढ़ना हमेशा अच्छा होता है, परन्तु बहुत सी कलीसियाएं गलत दिशा में बढ़ सकती है। कई बातें शैतान की इच्छा होती हैं (लूका 13:16; 1 थिस्सलुनीकियों 2:18) न कि परमेश्वर की इच्छा। परमेश्वर यदि किसी बात को होने देता है तो इस का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि उस ने इस का अधिकार दिया है।

पौलुस को फिलेमोन के पास उनेसिमुस के लौटने के सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा का पक्का पता नहीं था (फिलेमोन 15)। उस ने कहा, "क्योंकि क्या जानें कि वह तुझ से कुछ दिन के लिए इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे।" अपने ईश्वरीय प्रकाशनों और दर्शनों के साथ पौलुस को हमेशा यह पता नहीं होता था कि कोई घटना परमेश्वर के उपाय द्वारा किए गए कार्य का भाग है या नहीं। हमारे लिए यह कहना लाभदायक है कि "यदि प्रभु की इच्छा हो," परन्तु यह कहना नहीं "मैं जानता हूं कि यह प्रभु की आशीष है।" पहले वाली बात भरोसे को दिखाती है जबकि बाद वाली बात अज्ञात बातों के सम्बन्ध में घमण्ड और कल्पना को दिखाती है।

इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल केवल चलन से बाहर हुआ मुहावरा नहीं था बल्कि नये नियम के मसीही लोगों के बोलचाल में दिखाए गए विश्वास की गम्भीर बात है। वे इस बात को मान रहे थे कि परमेश्वर मनुष्यों के मामलों में राज करता है। बिना इस यकीन के और परमेश्वर के उलट उपाय में विश्वास के हमारा निजी परमेश्वर में निजी विश्वास ही कमज़ोर है। याकूब 4:13–16 में दिखाता है कि हमें इस थोड़ी देर रहने वाले जीवन को कैसे देखना चाहिए:

> तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। इस के विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे। पर अब तुम अपनी डींग मारने पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है।

ज्योति पाना और बपतिस्मा (6:4)

दूसरी सदी के कलीसिया के पुरखा बपतिस्मे के पल को ''ज्योति'' का समय क्यों कहते थे? क्या वे इस समय को उस समय के रूप में मानते थे जब कोई मसीह में आकर ''ज्योति में चलना'' आरम्भ करता है (1 यूहन्ना 1:7)? निश्चय ही ऐसा ही था। वे आज के अधिकतर धर्मशास्त्रियों की तरह नहीं देखते थे कि यह कार्य व्यक्ति को ''मसीह में'' डालता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27) ताकि नया मसीही व्यक्ति ज्योति में बना रहे। यहां पर व्यक्ति ने सच्चाई की आज्ञा को मानकर और ज्ञान पाने के अपने सफ़र को आरम्भ किया है। यह वह भी समय है जब उसे ''अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' गया है (कुलुस्सियों 1:13)।

''ज्योति'' ज्ञान और समझ का प्रतीक है जबकि ''अंधकार'' में होना पाप और अज्ञानता में होने को दिखाता है। मसीही लोग ''ज्योति की संतान'' है ''न अंधकार के'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:4, 5)। इस का अर्थ यह है कि जो मसीह में है वह खतरों से सावधान रहे (आयत 6)।

स्वर्गीय दान (6:4)

रोमियों 6:23 कहता है, ''परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।'' यह बहुमूल्य दान सक्रिय विश्वास के परिणामस्वरूप मिलता है। यूहन्ना ने घोषणा की कि यह दान विश्वास के द्वारा दिया जाता है, न कि विश्वास करते समय पहले किसी के पास होता है (यूहन्ना 1:11, 12) यह दान उन के लिए है जो विश्वास करते हैं: ''जितनों ने उसे ग्रहण किया उस ने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उस के नाम पर विश्वास रखते हैं।'' ''होने का अधिकार'' का अर्थ यह नहीं है कि किसी के पास ''पहले से है।'' जब कोई यात्री हवाई टिकट खरीदता है तो उसे हवाई अड्डे पर जाने, जहाज़ पर बैठने और अपनी मंज़िल पर उड़कर जाने का अधिकार मिल जाता है। परन्तु टिकट होने का अर्थ यह नहीं है कि वह अपनी मंज़िल पर पहले ही पहुंच गया है। विश्वास महिमा पाने की हमारी टिकट है, परन्तु यदि हमें स्वर्ग में पहुंचना है तो हमें इसे सम्भालना और इसकी देखभाल करनी आवश्यक है।

मन फिराव के लिए कभी वापस न आना (6:6)

जब परमेश्वर ने हमें स्वतन्त्र नैतिक जीव बनाया तो उस ने हमें मसीह के पीछे चलने या उस से दूर हो जाने की पसन्द चुनने दी। इब्रानियों 6:6 दिखाता है कि परमेश्वर हमें अपनी पसन्द करने देता है। कोई मसीह में अपने व्यक्तिगत विश्वास को क्रूस पर चढ़ाकर उसमें हर आशा को खो सकता है। वचन उस व्यक्ति की बात कर रहा है जो बदला था, मेमने के लहू के द्वारा बचाया गया था और इस प्रकार उस के पास कुछ था जिस से भटका जा सकता था।

किसी बीमारी की थोड़ी सी दवा लेकर कोई उस को रोक सकता है। वैसे भी मसीही विश्वास को खुराक लेकर व्यक्ति संसार की ओर लौटकर फिर से मसीह के लाभों से असंवेदनशील हो सकता है। कोई मन फिरा सकता है और फिर गिर सकता है परन्तु फिर परमेश्वर की ओर लौट सकता है; वह अपने विश्वास को भी खो सकता है और इसे फिर से बहाल करने के योग्य हो सकता है। जब कोई व्यक्ति उन आशिषों के लिए जो किसी समय उस के लिए बड़ी अद्भुत थी,

अपने सवाद को खो देता है तो वह इसे दोबारा कभी पा नहीं सकता। जब बात यहां तक पहुंच जाए ऐसा कब होता है शायद केवल परमेश्वर ही जानता है; परन्तु मेरा मानना है कि कुछ लोगों को पता होता है कि वे मन फिराव के प्वायंट से आगे निकल गए हैं। ''इसे पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप ठीक ही कहा जाता है। ...'[148] कई बार हम सुनते हैं कि यदि किसी को डर हो कि उस ने यह पाप किया है, तो उसकी परख इस बात का प्रमाण है कि उसे मालूम है कि उस ने वह नहीं किया है। ऐसे भय को छुपाने की कोशिश करने वाला व्यक्ति हो सकता है कि मन फिराव के उस स्तर तक कभी न पहुंचे जो उद्धार दिलाने वाले आज्ञापालन और आश्वासन तक ले जाता है।

चार अनहोनी बातें (6:6)

इब्रानियों की पुस्तक में चार ''अनहोनी बातें'' दी गई हैं। पहली आयत 6 में मिलती हैं। जब कोई ''भटक जाए'' तो परमेश्वर कहता है कि उस के लिए मन फिराव के लिए नया होना अनहोना है। परमेश्वर के लिए अनहोनी बात झूठ बोलना है (6:18)। तीसरी अनहोनी बात यह है कि बैलों और बकरों का लहू पाप नहीं उठा सकता था (10:4)। अन्तिम ''अनहोनी बात'' बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करना है (11:6)।

हमारे उद्धार का उद्देश्य (6:6)

क्या यीशु ने हमारा उद्धार केवल हमें स्वर्ग में ले जाने के लिए किया? यदि ऐसा है तो हम वहां पहुंच क्यों नहीं गए? नहीं, उस ने हमारा उद्धार इसलिए किया ताकि हम आत्मिक सिद्धता में बढ़ें और उद्धार पाने के लिए दूसरों की सहायता कर सकें। हमें परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करने का यत्न करना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 7:1)। पौलुस ने हमें अपने उद्धार के लिए कार्य करने को कहा है (फिलिप्पियों 2:12)। हमारे प्रभु ने हमें बढ़ने और सिद्ध होने के लिए पाप से स्वतन्त्र किया है न कि मसीह में बालक बने रहने के लिए। वह परमेश्वर जो हमारे सिर के बालों तक गिन सकता है (मत्ती 10:30) निश्चय ही जानता है कि हम इस दिशा में बढ़ रहे हैं। वह हमारी बड़ी से बड़ी आवश्यकताओं, हमारे आनन्द और शोक को और हमारी इच्छाओं को हमारे उस से कुछ भी मांगने से पहले जानता है।

फलदायक होना (6:7, 8)

बीज बोने वाले के दृष्टांत में यीशु ने अपने सुनने वालों को चेताया कि कुछ लोग केवल थोड़ी देर के लिए ''विश्वास'' करें और फिर ''भटक जाएंगे'' (लूका 8:5–15)। संक्षेप में उस ने समझाया, ''इसलिए चौकस रहो कि तुम किस रीति से सुनते हो'' (लूका 8:18क)। हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है कि वह वचन को कैसे सुनता है या ''बीज को ग्रहण करता है।'' हमें परमेश्वर के प्रकट वचन के हर विचार पर ध्यान देना और इसे मानना आवश्यक है। समझने और आज्ञा मानने की योग्यता होना सुनने वाले पर बड़ी ज़िम्मेदारी डाल देता है (मत्ती 13:23)। हमारे लिए ''आत्मा का फल'' देने या ''शरीर के काम'' करने में से दोनों में एक पसन्द दी गई है (गलातियों 5:19–23)। परमेश्वर के वचन को समझने और अपने मनों में इसे लागू करने से बाद वाली स्थिति के बजाय पहले वाली स्थिति होगी। फिर हमें परमेश्वर की असली आशिषें

मिलेंगी। लूका 8:15 कहता है, ''पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।'' प्रत्येक संत यानी पवित्र जन के लिए आवश्यक है कि ''अपने बुलाए जाने और चुन लिए जाने को पक्का करने के लिए यत्न करे'' (2 पतरस 1:10; KJV)।

भाइयों की प्रशंसा करना (6:9)

साथी मसीही लोगों को विशेषकर प्रचारकों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। हम लोगों को धमकाएं न तो हमारे भाई प्रभु को प्रसन्न करने की उस से अधिक कोशिश कर रहे हो सकते हैं जिस का हमें पता है। यदि हम और प्रोत्साहन और सांत्वना देने की कोशिश करेंगे तो यह हम सब को बरनबास जैसे बना देगा (प्रेरितों 4:36)। हमें कलीसिया में ऐसे और लोगों की आवश्यकता है! हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों की सचमुच की भलाई पर यकीन होना चाहिए। दूसरों को पता चलना चाहिए कि हम उन का आदर और सराहना करते हैं। लेखक ने अपने पाठकों को प्रोत्साहित किया क्योंकि उसे मानो मानवीय मन के विज्ञान का पता था। हम पर बोझ डालने के लिए हमारे पास काफ़ी कुछ है। डांट आवश्यक है परन्तु हम अपने प्रचार को संतुलित रखें। यदि हम इतने नकारात्मक हो जाएंगे कि दूसरों की भलाई के प्रति अपनी जागरूकता को खो दें तो हम किसी भी भलाई की अपनी जागरूकता को खो देंगे। संतुलन केवल इब्रानियों की पुस्तक में ही नहीं बल्कि बाइबल की सभी पुस्तकों में मिलता है।

''उद्धार वाली बातें'' (6:9, 10)

हमारे उद्धार के साथ बहुत सी अद्भुत आशिषें होती हैं। कुछ आशिषें वास्तव में मुख्य उद्धार में नहीं होती परन्तु वे इस के साथ चलने वाले अलौकिक, या होते हैं। स्वर्ग में हमारे नाम लिखे जाने पर हमें जो लाभ मिलते हैं उनमें से कुछ लाभ कौन कौन से हैं (12:23)?

दूसरों की सेवा करने और यह मानने का कि जीवन का हमारा उद्देश्य परमेश्वर के राज्य की सेवा करने के कारण है। जब हम दूसरों की सहायता करते हैं तो हम अपने भीतरी फोकस से दूर हटकर यीशु की महिमामय सोच में चले जाते हैं। बदले में यह हमें संतुष्टि की नई उंचाइयों पर ऊपर उठा सकता है। हमारा उद्धार भले कामों में बढ़ना चाहिए क्योंकि हमें इसी कारण से ''मसीह यीशु में सृजे गए'' हैं (इफिसियों 2:10)। संसार के लोगों को इस सोच से किी उनकी निराशाजनक स्थिति में सुधार के लिए कुछ नहीं किया जा सकता, अपने कामों और व्यवहारों में कोई उद्देश्य नहीं होता। दूसरों की सहायता करने से हमें अपने लिए लाभ मिल जाता है।

जब हम विश्वास से आज्ञापालन के द्वारा उद्धार की प्रभु की पेशकश को स्वीकार करते हैं (इब्रानियों 5:8, 9) तो हमें पता चलता है कि उस के द्वारा हम से कितना प्रेम किया गया है ताकि हम दूसरों से प्रेम रखें (1 यूहन्ना 4:19)। जितना हम इस प्रेम को बांटेंगे उतना ही हमें प्रेम मिलेगा। यह सचमुच ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)। जितना हमें मिला है हम उस से अधिक नहीं दे सकते, क्योंकि खुले मन से देने वालों को खुले मन से आशिष मिलती है (2 कुरिन्थियों 9:6–11)। यह वह सबक है जिसे धर्मी लोग बार बार सीखते हैं।

परमेश्वर का हमें याद रखना प्रतिदिन के मनन के योग्य विचार है (आयत 10)। सबसे

बढ़कर वह निष्पक्ष है और उस करूणा को जो हम ने दिखाई है बड़े ध्यान से विचार करता है। परमेश्वर उन चीज़ों को भूल नहीं सकता है जो हम उसकी सेवा में करते हैं क्योंकि वे उस के लिए दिए गए काम हैं! यीशु ने न्याय के आधार के रूप में इस सच्चाई की घोषणा की: किसी भाई की आवश्यकता में सहायता करके हम वास्तव में अपनी सहायता कर रहे होते हैं (मत्ती 25:40)। मसीह में दुख उठाने वाले भाई की जब हम सहायता करते हैं तो वह हमारे लिए "मसीह" बन जाता है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए, "मैं निर्धन की सहायता करने में मसीह के जैसा बन गया हूं"; बल्कि हमें यह समझना आवश्यक है कि "ज़रूरतमंद व्यक्ति मुझे अपने प्रभु की सेवा करने का अवसर देकर मेरे लिए मसीह बन गया है।"

यह सोचकर कि हमारे कामों को नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है हम कभी निराश मत हों। परमेश्वर भूलता नहीं है! हम यह न सोचे कि "जो मैं करता हूं इसकी किसी को परवाह नहीं है कि मेरी सेवा सचमुच लाभ नहीं है।" यह सोचना कि हर कोई हमें नज़रअन्दाज़ कर रहा है परमेश्वर को भूल जाना है!

"कभी हार न मानो" (6:11, 12)

दूसरों की सेवा करके (6:9, 10) हम विश्वास में बढ़ते जाएंगे और "पूरी आशा" को पाएंगे (आयत 11)। यह आयतें हमें अनुग्रह में बढ़ने ओर बहुतायत के प्रतिफल वाले पक्के उद्धार को पाने के पतरस के उपदेश का स्मरण दिलाती है (2 पतरस 1:5–11) पतरस ने इस विश्वास की नींव पर बनाते हुए हमें इस सुनिश्चित्ता को बढ़ाने के सात पग बताएं हैं: सद्गुण, समझ, धीरज, भक्ति, भाईचारे की प्रीति और प्रेम। जब हम इन गुणों में बढ़ेंगे तो हम फलदायक भी होंगे। तब हम अपने "बुलाए जाने" और हमें बहुतायत से दिए गए अनन्त राज्य में अपने परमेश्वर के बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं (2 पतरस 1:8, 10, 11)। यदि हम ठोकर खाते हैं और हमें मन फिराव की आवश्यकता है तो हमें अपने पहले प्रेम के कामों में वापस लौट जाना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 2:5)।

विलियम बार्कले ने आयतें 11 और 12 को इस प्रकार से लिखा है:

> हम पूरे दिल से उम्मीद करते हैं कि तुम में से हर कोई अपनी आशा के सच होने के लिए उसी जोश को दिखाएगा और तुम अन्त तक ऐसा ही करते रहोगे ताकि तुम आलसी होकर सुस्त न बन जाओ बल्कि उन की नकल करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।[9]

हम क्या कर सकते हैं जब आराधना फीकी सी, सरमन नीरस सा और बाइबल क्लास हमारे लिए रोमांचकारी न रहे? "उसी जोश को दिखाने" के लिए जो हमें मसीह तक ले गया, हमें आराधना सेवाओं में अपनी उपस्थिति बनाए रखना और कलीसिया के लिए काम करते रहना आवश्यक है। यदि हम प्रभु की सेवा में बने रहते हैं तो आनन्द फिर से आने लगेगा। दूसरों को जो हम से पहले हुए हैं इन्हीं बातों का अनुभव हुआ है।

"प्रयत्न" का अर्थ "इसमें लगे रहना" और राज्य की अपनी सेवा में कभी ढीले न पड़ना है। याद रखें कि हम उन्हें याद रखें जो हम से महिमा तक पहुंचे हैं; उन्होंने समझौता करके हार

नहीं मानी। जिस प्रकार वे डटे रहे, हम भी डटे रहें। इब्रानियों 11 वाले उदाहरणों में, जो उन बहुत से जीवनों को प्रकाशमान करता है जो कालांतर में विश्वासयोग्य रहे, को भुलाएं न। जो कोई अपनी आंखें खोलता है उसे परमेश्वर की आशिषों की बातें रोज याद आएंगी जो उस से प्रेम रखते हैं। वह हमारी भलाई के लिए ही काम करता है (रोमियों 8:28)। अगुआई और सहायता के लिए उसकी ओर ताकते रहने वालों को शर्मिंदा नहीं करेगा। व्यवस्थाविवरण 31:6 से उद्धृत करते हुए इब्रानियों 13:5 हमें आश्वस्त करता है, ''मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा।'' इब्रानियों 13:6 एक दोहरा विचार देता है जिसे भजन संहिता 118:6 से उद्धृत किया गया है: ''प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?'' परमेश्वर की उपस्थिति की प्रतिज्ञा उन के लिए है जो निकट रहते हैं।

शपथः हर झगड़े का अंत (6:15, 16)

लोग अपने दिए वचन को भूल जाते हैं जिस कारण गवाहों का होना आवश्यक है। परन्तु गवाह भूल सकते हैं जिस कारण हम कानूनी दस्तावेज़ रखते हैं। उन वायदों को ध्यान से लिखा जाना आवश्यक है ताकि वायदा की हुई शर्तों को पाने के लिए कोई संदेह न रहे। व्याख्या करने वालों का ईमानदार होना आवश्यक है नहीं तो मुश्किलें खड़ी हो जाएंगी। परन्तु आदर्श रूप में शपथ हर झगड़े का हल बन जाएगी। किसी ज़माने में आदमी की ज़ुबान ही उस का अनुबंध होती थी और वह हर हाल में अपनी ज़बान पर खरा उतरता था! यदि सब लोग आदरयोग्य और सच्चे हो जाएं जैसे मसीह के राज्य में हमें होना आवश्यक है, तो किसी की बात पर सचमुच भरोसा किया जा सकता है। यदि सब लोग एक दूसरे से पूरी तरह से ईमानदार हो जाएं तो आज जितने भी झगड़े और समस्याएं हैं चाहे वह कलीसिया में हों या समाज में, हल हो सकते हैं। आइए ऐसे समय के आने की प्रार्थना करें।

शपथ खाना (6:16)

बहुत से लोगों का मनना है कि यीशु ने मत्ती 5:34 में हर प्रकार की शपथ खाने की मनाही की, परन्तु यह विचार बहुत सीमित हो सकता है। यीशु ने स्वयं अपने परमेश्वर का पुत्र होने के सम्बन्ध में केवल शपथ के आने पर ही उत्तर दिया (मत्ती 26:63, 64); 2 कुरिन्थियों 1:23 और 11:30 में पौलुस नें अपने आपको शपथ में डाला। याकूब 5:12 ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल करता है परन्तु ''किसी और शपथ'' की बात करता है। यह शब्द *allos* से लिया गया है जिस का अर्थ ''वैसा ही कोई और'' न कि *heteros* से, जिस का अर्थ होगा ''अलग किस्म का कोई और।'' फरीसियों ने अपने आप में एक ऐसा सिस्टम बना लिया था कि उन्हीं के अपने समूह के किसी और सदस्य के लिए कोई शपथ कब मान्य थी और कब अपनी बात को पूरा करने के लिए शपथ खाने वाले की आवश्यकता नहीं थी। एक अंक में यीशु ने कहा, ''सर्वदा सच बोलो, तो फिर शपथ की जरूरत ही नहीं है।'' मसीही लोगों को शपथ के साथ कसम कभी नहीं खानी चाहिए क्योंकि मसीह के चेले सच्चे होते हैं। अमेरिका की अदालतें व्यक्ति को ''मैं शपथ लेता हूं'' या ''मैं पुष्टि करता हूं'' में से कोई भी बात कहने की अनुमति देती क्योंकि दोनों में कानूनी तौर पर कोई अन्तर नहीं है। यदि कोई यह कहने के बाद कि ''मैं पुष्टि करता हूं''

अदालत में झूठ बालता है तो वह झूठी गवाही का वैसे ही दोषी होगा जैसे उस ने कहा हो, ''मैं पक्की शपथ खाता हूं।''

मसीही व्यक्ति को अपनी बात के पक्के व्यक्ति के रूप में जाना जाना चाहिए। परन्तु कानून के सम्बन्ध में काम करे हुए किसी का केवल कोई बात कह देना काफ़ी नहीं होता; शपथ आवश्यक होती है। किसी विशेष वेतन और शर्तों के लिए कोई काम करने का वचन देने पर भी उसे अपनी बात पर भी खरा उतरना चाहिए। 1984 में अमेरिका के एयर ट्रेफिक कंट्रोलों ने बेहतर वेतन और काम की स्थितियों के लिए हड़ताल पर जाने का विर्णय लिया। उन के कोन्ट्रेक्ट और सरकारी कानून ने इसे अपराध बताया। कानून और लोगों की सुरक्षा की आवयश्कता के कारण राष्ट्रपति ने हड़ताल पर जाने वाले सब लोगों को नौकरी से निकाल देने की धमकी दी। कर्मचारियों को यकीन नहीं था कि वह ऐसा करेगा परन्तु उस ने घोषणा की कि वे काम करते रहने की शपथ के अधीन हैं और उस शपथ का सम्मान करने से इनकार करने वालों को नौकरी से निकाल दिया।

परमेश्वर का वचन सच्चा और बे बदल है (6:18)

परमेश्वर का वचन हमेशा सच्चा होता है और उसी के आधार पर हम अनन्त सच्चाई पर भरोसा कर सकते हैं। वह झूठ नहीं बोल सकता या हम से किए वायदों से मुकर नहीं सकता। क्षमा की परमेश्वर की शर्तों के कुछ अपवाद हो सकता है कि हमें पसन्द न हों परन्तु वह हमारा विशेषाधिकार नहीं है। हमारा कर्त्तव्य केवल क्षमा की उन शर्तों को बताना है जो उस ने ठहराई हैं और खरा उतरने के लिए उस के वचन पर निर्भर होना है।

अधोलोक में *Dives* (''धनवान'' के लिए लातीनी शब्द) अपने भाइयों पर अतिरिक्त दया दिखाए जाने के लिए पुकार उठा था जो अभी पृथ्वी पर थे (जो इस बात का संकेत है कि वह अभी बीच की स्थिति में था)। एक अर्थ में उसे उत्तर मिला, ''मूसा और नबियों के द्वारा दिया गया परमेश्वर का प्रकट वचन काफ़ी है।'' तेरे भाइयों को निर्धनों पर दया दिखाने की पूरी चेतावनी दी गई है। जैसे तू नहीं दिखा पाया। उन के जैसे कठोर पापी तब भी नहीं बदलेंगे यदि उन्हें पता चले कि कोई मुर्दों में से जी उठकर आ गया है। वे आशा के बाद है। उन के लिए कोई विशेष आश्चर्यकर्म करना समय की बर्बादी होगा (लूका 16:27-31)।

लंगर व अन्य चिह्न (6:19)

दूसरी सदी के अन्त तक लंगर का चिह्न आत्मा के चिह्न के रूप में कबूतर के साथ मसीही आशा का चिह्न बन गया था। ''मछली'' के लिए यूनानी शब्द के अक्षरों (*ichthus*) का इस्तेमाल परिवर्णी शब्दों (किसी शब्द के पहले अक्षरों को जोड़ कर बनने वाला शब्द) के रूप में करते हुए जो मूल में ''यीशु मसीह परमेश्वर पुत्र उद्धारकर्त्ता'' बनता है, मछली विश्वास की तस्वीर बन गई थी।[50] आशा को दर्शाते हुए आरम्भिक मसीही कब्रों के चिह्नों पर लंगर आम तौर पर देखने को मिलता था। परमेश्वर के वचन में भरोसा रखने वालों के लिए ऐसे शब्द अनावश्यक हैं। मसीह ने हमें बपतिस्मा और प्रभु भोज के दो प्रतीक दिए हैं। बपतिस्मा वह प्रतीक है जिसमें पाप से उद्धार वास्तव में व्यक्ति के ''मसीह में बपतिस्मा'' लेने पर होता है। पौलुस ने रोमियों 6:3 में रोमियों को यही सच्चाई याद दिलाई (देखें गलातियों 3:26, 27); पतरस ने 1 पतरस

3:20, 21 में इसी सबक का संकेत दिया। प्रभु भोज में ली जाने वाली रोटी और कटोरा उसकी देह और उस के लहू में हमारी सहभागिता का प्रतीक हैं (1 कुरिन्थियों 10:16)। भोज में भाग लेकर हम मसीह की मृत्यु और उस के द्वितीय आगमन की अपनी उम्मीद का प्रचार करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)। किसी और अनाधिकृत प्रतीक को जोड़ने से हमें दिए गए इन दोनों प्रतीकों का महत्व कम हो सकता है। निश्चय ही मनुष्य की सोच से परमेश्वर की बुद्धि को बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

क्रूस का निशान पहनने और लंगर का निशान पहनने में कोई अंतर नहीं है। यह ढंग वास्तव में हानिकारक है यदि कोई यह सोचने लग पड़े कि प्रतीक किसी प्रकार से उस के जीवन की "रक्षा करता है।" प्रतीक प्रभु में हमारे मज़बूत विश्वास को याद दिलाने को छोड़ और किसी काम के नहीं हैं।

हमारा लंगर मसीह में मिली हमारी आशा है। एक पुराने भजन में यह कहानी है:

> उद्धारकर्त्ता के प्रेम में गहराई की चट्टान से जो हिल नहीं सकती,
> बंधा हुआ हमारा एक लंगर है
> जो बड़ी लहरों के आने पर
> प्राण को सम्भाले और सुरक्षित रखता है।[51]

हमारा विश्वास और आशा अक्सर हमें अविश्वासियों के कारण आने वाले तूफ़ानों में बह जाने से बचाता है। इब्रानियों के लेखक ने लंगर के रूपक पर और ज़ोर नहीं डाला; वह केवल इतना समझा रहा था कि मसीही लोगों को जीवन के तुफ़ानों में सुरक्षित लंगर डालने की जगह मिली है।

हमारी आशा का विश्राम स्थान (6:20)

हमारी आशा अपने अग्रणी यीशु पर लगी होनी चाहिए। वह हमारे लिए मार्ग तैयार करने के लिए हम से पहले गया है। हमें और किसी भी बात से बढ़कर उसी पर ध्यान टिकाना चाहिए (12:1, 2)। "हमारी हठी इच्छाओं, उसे अपने जीवन देने के हमारे इनकार के बजाय हमारे और परमेश्वर के बीच में और कोई चीज़ नहीं है।"[52] स्वर्ग में जाकर उस ने हमारे लिए अपने पीछे आना सम्भव बना दिया है। क्या हमारी आशा सांसारिक चीज़ों से बढ़कर स्वर्ग पर है? कुलुस्सियों 3:1–4 में हमें अपने मनों को ऊपर की बातों "पर मन लगाने" की बात समझाई गई है। धर्मी मुर्दे वहां महिमा में मसीह के साथ होंगे। मसीह पहले ही जहां है, हमारी आशा वहीं होनी चाहिए।

टिप्पणियां

[1]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 195, एन. 33. [2]आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रेटेशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ एंड ऑफ़ द एपिस्टल ऑफ़ जेम्स* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 176. [3]एफ. एफ. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस

पब्लिशिंग कं., 1964), 112. [4]जेम्स टी. ड्रेर्पर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़स गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 140. [5]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री*, द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 137. [6]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 84, एन. 12. [7]9:14 का संदर्भ व्यवस्था के अधीन किए गए कामों का संकेत देता है। ऐसे काम शरीर को पवित्र या शुद्ध नहीं कर सकते थे। यह शब्द सुझाव देता है, ''व्यवस्था से मसीह की ओर मुड़ो।'' [8]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 250. [9]इस बात का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है कि यहूदी बनने वालों का बपतिस्मा इतना पहले होता हो। [10]ब्रूस, 114–16.

[11]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 18.5.2. [12]किस्टमेकर, 155. [13]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 122. [14]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने नये नियम में सात बपतिस्मे गिनवाए हैं जिसमें एक तो पवित्र आत्मा का और एक और आग का (मत्ती 3:11); यूहन्ना का (मत्ती 3:16); मूसा का (1 कुरिन्थियों 10:2); दुःखों का (लूका 12:50); मरे हुओं के लिए (1 कुरिन्थियों 15:29); और ग्रेट कमीशन का (मत्ती 28:18–20) बपतिस्मा है। (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* [आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971], 117.) [15]2:4 पर चर्चा देखें। [16]ब्रूस, 118. [17]प्रेरितों 18:21; देखें 1 कुरिन्थियों 16:7; याकूब 4:15. जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 20.11.3; जॉर्ज वेस्ली बुचनन, *टू द हिब्रूज़: ट्रांसलेशन, कमेंट एंड कंक्लूज़ंस*, द एंकर बाइबल, अंक 36 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे, 1972), 105. [18]आर्थर डब्ल्यू. पिंक, *ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 286. [19]ड्रेर्पर, 149. [20]ह्यूजस, 206.

[21]मोज़ज़ स्टुअर्ट, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज* (लंदन: विलियम टेग्ग एंड कं., 1856), 372. [22]गुथरी, 142. [23]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 124. [24]नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकस, 2002), 8. [25]अलबर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदन: ब्लैकी एंड सन, 1884–85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकस हाउस, 1985), 134. [26]लेंसकी, 186. [27]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेज़ एंड हाल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 223. [28]सोलहवीं सदी में इरेसमुस ने इस का अनुवाद इस प्रकार से किया। (लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 125.) [29]''लेखक द्वारा 'गिरने वालों' के वर्णन के लिए बताई गई बातें निश्चय ही अधितकर वे बातें हैं जो सच्चे मसीही में होती हैं'' (*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री*, संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन, एंड जी. सी. डी. हॉवले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986], 1515 में गेरल्ड एफ़. हाअर्थोन, ''हिब्रूज़'')। [30]''सूई का नाका'' का विचार बहुत बाद की मध्यकालीन सोच के बड़े फाटक के बीच एक छोटा फाटक होने का है।

[31]क्षमा से बाहर हत्या, झूठ बोलना आदि जैसा कोई स्पष्ट पाप नहीं है, इस कारण ''निन्दा'' में मन की वह अवस्था होगी जो मन फिराने से रोकती है। [32]देखें मत्ती 3:11, 12; 13:40–42, 50; 18:8; 25:41; मरकुस 9:43, 48; लूका 3:16, 17; इब्रानियों 10:27; 12:29; 2 पतरस 3:10–13; यहूदा 7, 23; प्रकाशितवाक्य 14:10; 20:10, 14, 15; 21:8; देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:7. [33]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 128. [34]लेंसकी, 195. [35]पिंक, 337. [36]ब्रूस, 129. [37]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 134; फिलो *द सैक्रिफाइसज़ ऑफ एबल एंड कैन* 29.94–96; *एलीगौरीकल इंटरप्रेटेशन* 3.72–73. [38]लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़*, 83. [39]एडोल्फ डियसमन, *बाइबल स्टडीज़*, अनु. एलेक्जेंडर ग्रीव (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901), 104–9. [40]लेंसकी, 203.

[41] शरण का नगर अभी भी जेल के जैसा होगा; क्योंकि यदि कोई मनुष्य घातक इसे छोड़ दे तो ''लहू का बदला लेने वाला'' उसे मार सकता था। ''जेल'' के अर्थ वाले इसी शब्द का एक रूप LXX में व्यवस्थाविवरण 4:42 और यहोशू 20:6 (अंग्रेज़ी में 20:9) में ''आश्रय के लिए भागे'' (ASV) का अर्थ देने के लिए इस्तेमाल हुआ है। (रीस, 100, एन. 78.) [42]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 131, एन. 27 में उद्धृत। [43]हाअर्थोन, 1517. [44]ड्रेपर, 174. क्रेग आर. कोस्टर ने कहा कि इसे सिपाहियों या जहाज़ों, या धावक के लिए लागू किया सकता है जो दौड़ जीतने के लिए समूह में से भाग जाता है। (क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू टैस्टामैंट विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री*, द एंकर

बाइबल, अंक 36 [न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001], 330.) [45]ब्रूस, 132, एन. 83. [46]देखें रोमियों 6:3–5; 1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 5:26; कुलुस्सियों 2:11, 12; तीतुस 3:5; इब्रानियों 10:22; 1 पतरस 3:21. [47]मोज़ज़ ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमंस* (लेक्सिंग्टन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइटफुट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 386. [48]पिंक, 293. [49]विलियम बार्कले, द *लैटर टू द हिब्रूज़,* 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1957), 60. [50]इस परिवर्णी (कि सी नाम के कई शब्दों में आरंभिक अक्षरों से बना शब्द) को दर्शाते शब्द हैं *Iēsous* (''यीशु''), *Christos* (''मसीह''), *Theos* (''परमेश्वर''), *huios* (''पुत्र''), और *sōtēr* (''उद्धारकर्त्ता'')।

[51]प्रिसकिल्ला जे. ओवन्स, ''वी हैव ऐन एंकर,'' *सॉन्स एंड फेथ एंड प्रेज़,* कंप. एंड संपा. अल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [52]ड्रेपर, 174.